महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री कयामतनामा (छोटा)

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री कयामतनामा (छोटा)

मोमिन दुनीका बेवरा

जो नूर पार अरस अजीम, ए जो बेवरा कयामत का ।
मोमिन दुनी की तफावत, ए फना ओ बीच बका ॥ १

अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधाम है. उसीकी पहचानके लिए कयामतका विवरण है. ब्रह्मात्माएँ अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामकी हैं और जगतके जीव नश्वर भूमिकाके हैं. इन दोनोंमें यही अन्तर है.

जब लाहूत से रूहें उतरीं, कह्या अलस्तो बे रब कुंम ।
नासूत जिमीमें जाए के, जिन मुझे भूलो तुम ॥ २

कुरानमें उल्लेख है कि जब ब्रह्मात्माएँ परमधामसे इस नश्वर जगतमें अवतरित हुईं उस समय खुदाने उनसे कहा, मैं तुम्हारा स्वामी हूँ (अलस्तो बि रब्ब कुम). तुम नश्वर जगतमें जा कर मुझे भूलना नहीं.

तब रूहों बले कह्या, हम भूलें नहीं क्योंए कर ।
तुम साहेद किए रूहें फिरस्ते, पल रेहे न सकें तुम बिगर ॥ ३

तब ब्रह्मात्माओंने कहा, 'अवश्य' (वले) आप ही हमारे स्वामी हैं. हम

आपको किसी भी प्रकार नहीं भूलेंगे. आपने हम आत्माओंके लिए देवदूतों (फरिश्ताओं) को साक्षी बनाया है. हम आपके बिना पलमात्रके लिए भी नहीं रह सकतीं.

तुम खावंद हमारे सिर पर, अरस अजीम बका वतन ।
हम क्यों भूलें सुख कायम, तुमारे कदमों हमारे तन ॥ ४

आप हमारे स्वामी हैं (हम आपकी छत्रछायामें हैं), अखण्ड परमधाम हमारा घर है. हम आपके अखण्ड सुखोंको कैसे भूल सकेंगी जब हमारे मूल तन (पर आत्मा) ही आपके चरणोंमें हैं.

हकें कौल किया भेजों मासूक, तिन के साथ फुरमान ।
भेज इलम लेऊं जगाए, देसी रूहअल्ला सब पेहेचान ॥ ५

उस समय परमात्माने वचन दिए, मैं श्रीश्यामाजीको सन्देशवाहक बनाकर तुम्हारे लिए भेजूँगा. उनके साथ मेरा सन्देश होगा. मैं अपना ब्रह्मज्ञान भेज कर तुम्हें जागृत कर लूँगा. श्रीश्यामाजी इसी ब्रह्मज्ञानके द्वारा तुम्हें सब प्रकारकी पहचान करवाएँगी.

हाथ रसूल के फुरमान, रूहअल्ला साथ इलम ।
हादी करावें हजूर बंदगी, खोले पट हक के हुकम ॥ ६

इस प्रकार परमात्माने अपने सन्देशवाहक (रसूल) के हाथ सन्देश भिजवाया और श्रीश्यामाजीके साथ जागृत बुद्धिका ज्ञान (तारतम ज्ञान) भिजवाया. अब श्रीश्यामाजी श्रीराजजीके आदेशसे अज्ञानके आवरणोंको दूर कर परब्रह्म परमात्माकी भक्ति करवाएँगी.

तीनों सूरत महंमद की, तिन जुदी जुदी करी पुकार ।
रूहें फिरस्ते लेवें सब साहेदियां, जो लिख भेजी परवरदिगार ॥ ७

रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट श्रीश्यामाजीके तीनों स्वरूपोंने भिन्न-भिन्न प्रकारसे ज्ञान प्रदान किया. इस प्रकार ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि परमात्मा द्वारा भेजे गए सन्देशको साक्षीके रूपमें ग्रहण करेंगीं.

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब ।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब ॥ ८

श्रीश्यामाजीके तीनों स्वरूपों (बशरी, मलकी और हकी) को अलग-अलग प्रकारकी शोभा (उपाधियाँ) प्राप्त हुई है. उनमें-से एक परमात्माका सन्देश ले आए. दूसरेने तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी प्रदान की तो तीसरे धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करते हैं.

लिख भेजी रमूजें इसारतें, दो गिरो तीन सूरत पर ।
दूसरा बका की न खोल सके, ए वाहेदत गुझ खबर ॥ ९

परमात्माने इन तीनों स्वरूपोंके द्वारा ब्रह्मसृष्टि एवं ईश्वरीसृष्टिके लिए परमधामके गूढ़ रहस्योंको सङ्केतके रूपमें भेजा है. इन अद्वैत स्वरूपोंके अतिरिक्त अन्य कोई भी अखण्ड परमधामके एकात्मभावके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट नहीं कर सकता है.

हजरत आए आया सब कोई, और ले चलेंगे सब ।
ए लिखियां जो इसारतें, फुरमाया फिरे न कब ॥ १०

अब स्वयं परमात्मा सद्गुरुके रूपमें प्रकट हुए हैं. उनके साथ सभी शक्तियाँ सम्मिलित हो गई हैं. वे सभी सृष्टियोंको निर्मल कर ब्रह्मात्माओं एवं ईश्वरीसृष्टिको अपने-अपने धाममें जागृत करेंगे. कुरानमें इस प्रकारके जो भी सङ्केत दिए गए हैं, वे कभी भी निरर्थक नहीं होंगे.

चले लैलत कदर से, तकरार जो अव्वल ।
सो भेलें दुनीके क्यों चलें, जो उमत अरस असल ॥ ११

परमात्मा ही ब्रह्मात्माओंको महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के प्रथमखण्ड व्रजसे रास मण्डलके लिए ले गए हैं. नश्वर जगतके जीव अखण्ड परमधामकी इन ब्रह्मात्माओंके साथ-साथ कैसे चल सकते हैं ?

गिरो बचाई साहेब ने, तले कोहतूर हूद तोफान ।
बेर दूजी किस्ती पर, चढाए उबारी सुभान ॥ १२

इसी व्रज मण्डलमें इन्द्रकोपके समय श्रीकृष्णजीने ब्रह्मात्माओंको गोवर्धन

पर्वतके नीचे सुरक्षित रखा था. इस प्रसङ्गको कुरानमें हूद तूफान कहा गया है. उस समय हूद पैगम्बरने अपने समुदायके लोगोंको कोहतूर पर्वतके नीचे सुरक्षित रखा था. दूसरी बार नूह तूफानके समय भी उन्होंने ही योगमायाकी नावमें चढ़ाकर उन्हें पार किया था.

अब आई बेर तीसरी, तिनका सुनो बिचार ।
पेहेचान बिना गिरो क्या करें, या यार या सिरदार ॥ १३

ब्रह्मात्माएँ अब तीसरी बार इस ब्रह्माण्डमें आई हैं. उनका विवरण सुनो. ब्रह्मात्माएँ अथवा ईश्वरीसृष्टि ही क्यों न हों जब तक उन्हें पहचान नहीं होगी तब तक वे जागृत कैसे हो सकतीं हैं ?

या अरस आपकी पेहेचान, या हक हादी रूहें निसबत ।
गिरो खासी उतरी अरस से, और दुनी पैदा जुलमत ॥ १४

ब्रह्मात्माओंको अपने घर परमधामकी, स्वयंकी तथा श्रीराजजी एवं श्रीश्यामाजीकी पहचान है. वे स्वयं परमधामसे अवतरित हुई हैं. उनको कुरानमें श्रेष्ठ समुदाय (खासी गिरोह) कहा गया है. शेष सभी जीव शून्य-निराकारसे उत्पन्न माने गए हैं.

दिल मोमिन अरस कह्या, सैतान दुनी दिल पर ।
क्यों गिरो दुनी भेली चले, भई तफावत यों कर ॥ १५

इसीलिए ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा है, नश्वर जगतके जीवोंके हृदयमें तो दुष्ट इब्लीसका साम्राज्य है. इस प्रकार नश्वर जगतके जीव ब्रह्मात्माओंके साथ कैसे चल सकते हैं ? इन दोनों समुदायोंमें यही अन्तर है.

ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुसमन ।
एक हक न छोडें मोमिन, दुनी दुनियां बीच वतन ॥ १६

नश्वर जगतके जीवोंको न परमात्माकी पहचान है और न ही उनके साथ सम्बन्ध है. इसलिए वे ब्रह्मात्माओंके साथ शत्रुता रखते हैं. ब्रह्मात्माएँ अखण्डको छोड़ नहीं सकतीं जबकि नश्वर जगतके जीव नश्वर भूमिकाको ही अपना घर समझते हैं.

निसबत इन तफावत, ए भेलें चलें क्यों कर ।
दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पांउ गिरो के पर ॥ १७

इन दोनोंके सम्बन्धमें ही इतना अन्तर है. इसलिए ये दोनों साथ-साथ कैसे चल सकते हैं ? इन जीवोंका मार्ग कर्मकाण्ड अर्थात् पिपिलिकामार्ग कहलाता है जो कर्मानुसार क्रमशः चलते हैं जबकि ब्रह्मात्माएँ प्रेम एवं ज्ञानसे पङ्खोंसे उड़ कर आकाशीमार्ग (विहङ्गममार्ग) का अनुसरण करतीं हैं.

एक ईमान दूजा इसक, ए पर मोमिन बाजू दोए ।
पट खोल पोहोंचावे लुदंनी, इन तीनों में दुनीपे न कोए ॥ १८

ब्रह्मात्माओंको उड़ान भरनेके लिए एक ओर विश्वासका पङ्ख है तो दूसरी ओर प्रेमका पङ्ख है. इनके पास वह तारतम ज्ञान है जो अज्ञानके आवरणोंको दूर कर परमधामका अनुभव करवा सकता है जबकि नश्वरजगतके जीवोंके पास न प्रेम है, न विश्वास है और न ही इस प्रकारका ज्ञान है.

ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत चले रूह चाल ।
लिख्या एता फरक कुरानमें, दुनी उमत इन मिसाल ॥ १९

नश्वर जगतके जीव शरीरके द्वारा (कर्मकाण्डके मार्ग पर) चलते हैं जबकि ब्रह्मात्माएँ आत्माकी रीतिसे चलतीं हैं. इस प्रकार कुरानमें नश्वर जगतके जीव एवं ब्रह्मात्माओंमें इतना अन्तर लिखा है.

कह्या दुनियां दिल मजाजी, सो उलंघे ना जुलमत ।
दिल अरस हकीकी मोमिन, ए कहे कुरान तफावत ॥ २०

नश्वर जगतके जीवोंका हृदय भ्रमित है इसलिए वे शून्य-निराकारको पार कर आगे नहीं बढ़ सकते जबकि ब्रह्मात्माओंका हृदय सत्य परमात्माका धाम कहा गया है. कुरानमें इन दोनोंमें यह अन्तर कहा गया है.

इनमें रूह होए जो अरस की, सो क्यों रहे दुनीसों मिल ।
कौल फैल हाल तीनों जुदे, तामें होए ना चल विचल ॥ २१

इस जगतमें जो परमधामकी आत्माएँ होंगी वे नश्वर जगतके जीवोंके साथ

मिल कर कैसे रह सकेंगीं ? क्योंकि उन दोनोंके मन, वचन एवं कर्म तीनों ही भिन्न-भिन्न प्रकारके होंगे, जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होगा.

जो मोमिन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अरस तन ।
दुनियां घर जुलमत से, मोमिन अरस वतन ॥ २२

जो आत्माएँ नश्वर जगतके जीवोंकी रीतिके अनुसार चलतीं हैं उनके मूल तन (परआत्मा) परमधाममें नहीं हैं क्योंकि नश्वर जगतके जीवोंका घर शून्य-निराकार है एवं ब्रह्मात्माओंका घर अखण्ड परमधाम है.

पेहेले चल्या सैयद अकेला, तब तो थी सरीयत ।
अब अकेले क्यों छोडिए, गिरो पोहोंची दिन मारफत ॥ २३

रसूल मुहम्मद (सैयद) पहले अकेले आए थे इसिलए उन्होंने कर्ममार्गका विधान किया. अब तो ब्रह्मात्माओंके समक्ष ब्रह्मज्ञानका प्रभात उदय हुआ है. इसलिए उनको अपने धनीके बिना अकेली कैसे छोड़ा जा सकता है ?

पेहेले एक जहूद बुजरक, तिन पीठ न छोडी महंमद ।
यार असहाब न चल सके, ताकी दे मसनवी साहेद ॥ २४

पूर्वमें रसूल मुहम्मदके समयमें भी एक ऐसा यहूदी था जिसने उनका साथ नहीं छोड़ा था. उनके अन्य मित्र उनके साथ नहीं चल सके थे. इसकी साक्षी मसनवी ग्रन्थमें दी गई है.

जहूद कहिए क्यों तिन को, जो करे ऐसे फैल ।
आगे हुआ सबन के, कदम छोडी ना महंमद गैल ॥ २५

जिसका आचरण इस प्रकारका रहा है उसको यहूदी कैसे कहा जाए ? वह तो उन सभीसे आगे रहा. उसने रसूल मुहम्मदके मार्गको नहीं छोड़ा.

तिन खुली रूह नजर, जाए हकें बकसी बातन ।
इन राह सोई चलसी, जो हक अरस दिल मोमन ॥ २६

जिनको स्वयं परमात्माने अपने गूढ़ रहस्यको स्पष्ट करने वाला ज्ञान (तारतम ज्ञान) प्रदान किया है उनकी ही आत्मदृष्टि खुली है. ब्रह्मात्माएँ ही ब्रह्मज्ञानके

इस मार्ग पर चलेंगी जिनका हृदय परमात्माका धाम कहा गया है.

दिल मजाजी जो कहे, ताकों अरस दिल कबूं न होए ।
सो आए न सके वाहेदतमें, जिन दिल इबलीस कह्या सोए ॥ २७

जिनका हृदय मोहग्रस्त है वह परमात्माका धाम कभी नहीं हो सकता है. इसलिए नश्वर जगतके जीव कभी भी दिव्य परमधाममें नहीं आ सकते हैं. क्योंकि उनके हृदयमें दुष्ट इब्लीसका साम्राज्य है.

रसूलें राह बताई म्याराजमें, अरस लेसी सोई मोमन ।
देखाई चढ उतर, जो हकें खिलवत कहे सुकन ॥ २८

रसूल मुहम्मदने परमधामका मार्ग प्रशस्त किया. जो आत्माएँ इस मार्गका अनुसरण करतीं हैं वे ही ब्रह्मात्माएँ हैं. उन्होंने अपनी सुरताको परमधाम पहुँचा कर एवं वहाँसे लौटा कर परमात्मा द्वारा एकान्तमें कहे गए वचनोंसे मार्ग दर्शन किया है.

मजकूर करी महंमद ने, हक हादी बीच रूहन ।
हकें कह्या उतरते रूहों कों, सो सब मुसाफ करे रोसन ॥ २९

उस समय रसूल मुहम्मदने वह बातें बताई जो परमधाममें श्रीराजजी, श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके मध्य हुईं थीं. ब्रह्मात्माओंको इस जगतमें आते समय परमात्माने जो कहा था उसका उल्लेख कुरानमें किया है.

जो पोहोंच्या इन खिलवतें, दिल हकीकी इन राह ।
इत दिल मजाजी आए ना सके, जित इबलीस दिलों पातसाह ॥ ३०

जिनके हृदय सत्यप्रिय हैं वे ही ब्रह्मात्माएँ इस मार्ग पर चल कर परमधाम मूलमिलावाका अनुभव कर सकतीं हैं. नश्वर जगतके जीव इस मार्ग पर नहीं चल सकते जिनके हृदयमें दुष्ट इबलीसका साम्राज्य है.

भूले करें जाहेरियों सिफत, सुध न परी बातन ।
मारफत सूरज ऊगे बिना, क्यों देखें बका अरस तन ॥ ३१

बाह्यदृष्टिवाले मनुष्य ब्रह्मात्माओंकी प्रशंसाको अपने ऊपर ले कर बड़ी भूल

करते हैं. उनको धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंकी सुधि नहीं हुई है. वस्तुतः ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्यके उदय हुए बिना वे दिव्य परमधाम एवं ब्रह्म आत्माओंको कैसे देख सकते हैं ?

तो दें बडाई जाहेर परस्तोंकों, जो समझे नहीं हकीकत ।
हक इलम आए बिना, सो क्यों समझे मारफत ॥ ३२

जब तक परब्रह्म परमात्माकी यथार्थता स्पष्ट न हो जाए तब तक वे जगतमें प्रतिष्ठित देवी-देवताओंकी ही पूजा करते हैं. ब्रह्मज्ञानके अवतरण हुए बिना भी परब्रह्म परमात्माकी पहचान कैसे हो सकती है ?

सरीयत करे फरज बंदगी, करे जाहेर मजाजी दिल ।
बका तरफ न पावे अरस की, ए फानी बीच अंधेर असल ॥ ३३

नश्वर जगतके जीव कर्मकाण्डके आधार पर औपचारिक पूजा-वन्दना करते हैं. उनका हृदय असत्यकी ओर उन्मुख होता है. इनको अखण्ड परमधामकी दिशा प्राप्त न होनेसे ये नश्वरताको ही सत्य समझ कर अज्ञानरूप अन्धकारमें पड़े रहते हैं.

दिल हकीकी जो मोमिन, सो लें माएने बातन ।
हक इलम इसक हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन ॥ ३४

ब्रह्मात्माएँ सत्यहृदया कहलातीं हैं वे ही धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको ग्रहण करतीं हैं. वे तारतम ज्ञानरूपी ब्रह्मज्ञानको प्राप्त कर प्रेमपूर्वक परब्रह्म परमात्माकी सेवा करतीं हैं. ये ब्रह्मात्माएँ ब्रह्मज्ञानके प्रकाशमें अखण्ड धामका मार्ग ग्रहण करतीं हैं.

फेर आए रसूल स्याम मिल, सोई फेर आए यार ।
देख निसबत पांचों दुनीमें, क्यों छोडें असल अरस प्यार ॥ ३५

अब पुनः रसूल मुहम्मद श्यामसुन्दर श्रीकृष्णके साथ मिलकर मेरे हृदयमें अवतरित हुए हैं. श्रीश्यामाजीकी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माएँ भी इस जगतमें पुनः अवतरित हुई हैं. इस नश्वर जगतमें भी पाँचों शक्तियों (श्रीधनीजीका जोश, श्रीश्यामजीकी आत्मा, अक्षरकी बुद्धि, श्रीराजजीका आदेश, परमधामकी

मूलबुद्धि तारतम ज्ञान) को एक साथ सम्मिलित देख कर ब्रह्मात्माएँ अपने मूल स्नेहको कैसे छोड़ सकतीं हैं ?

कहे महंमद पेहेले जब मैं चलों, यार आए मिलें खिन माहें ।
ए वाहेदत की साहेदी, जाग्या जुदा रेहेवे नाहें ॥ ३६

मेरे हृदयमें स्थित श्रीश्यामाजी कहतीं हैं, अब मैं आगे-आगे चलूँगी. मेरी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माएँ क्षणमात्रमें ही आकर मुझसे मिलेंगी. उनके परस्पर अद्वैत सम्बन्धकी साक्षी यही है कि वे जागृत होने पर क्षणमात्रके लिए भी मुझसे अलग नहीं रह सकतीं.

मैं अव्वल जो चलों, साथ आए मिलें सब कोए ।
तो सिफत दुनियां मिने, खासी गिरोकी होए ॥ ३७

यदि मैं सर्वप्रथम आगे चलूँगी तो सभी सुन्दरसाथ जागृत होकर मुझसे आ मिलेंगे. उनके इसी आचरणसे इस नश्वर जगतमें ब्रह्मसृष्टियोंकी प्रशंसा होगी.

इत मैं चलों जो अव्वल, कर यारोंसों सहूर ।
तो खूबी होए तेहेकीक, नूर पर नूर सिर नूर ॥ ३८

इस नश्वर जगतमें भी मैं अपनी ब्रह्मात्माओंके साथ विचार-विमर्श कर आगे चलूँ तो निश्चय ही यहाँ पर क्षर, अक्षरसे परे अक्षरातीत दिव्य परमधामकी महिमा गायी जाएगी.

खूबी खुसाली अधिक, और ज्यादा सोभा संसार ।
ले प्याला रूह जगाए के, ल्यो इसक चलो हादी लार ॥ ३९

इस नश्वर जगतमें भी ब्रह्मात्माओंकी शोभा अत्यधिक है. सर्वत्र उनकी ही शोभा व्याप्त है. इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! तारतम ज्ञानके द्वारा अपनी आत्माको जागृत कर प्रेमका प्याला ग्रहण कर अपने सद्गुरुका अनुसरण करते हुए आगे बढ़ो.

पोहोंचे नहीं अंग दिल के, ताथें रूह अंग लीजे जगाए ।
तोलों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उडाए ॥ ४०

यह बाह्य कर्मकाण्ड शारीरिक शुद्धि पर्यन्त सीमित होनेसे हृदय तक नहीं

पहुँच सकता है. इसलिए आत्मभावको जागृत करो. जब तक अपना अहङ्कार समाप्त नहीं होगा तब तक ममत्व (मेरापन) नहीं छूटेगा.

जब उठें अंग रूह के, सो तूं जागी जान ।
आई अरस अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेचान ॥ ४१

जब आत्माके अङ्ग-प्रत्यङ्ग जागृत होंगे तब समझना कि तुम पूर्णतः जागृत हो गई हो. अङ्ग-प्रत्यङ्गमें परमधामका आनन्द सञ्चरित होने पर ही तुम्हें परब्रह्म परमात्माकी पूर्ण पहचान होगी.

जो अंग होवे अरसकी, उपजत नहीं अंग आहे ।
बारे हजार रूहन में, सो काहेको आप गिनाए ॥ ४२

जो परमधामकी आत्मा है उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें विरहकी आह नहीं निकलती है तो वह आत्मा स्वयंको बारह हजार ब्रह्मात्माओंमें अपनी गणना कैसे करवाएगी ?

करवट लेते सूते नींदमें, नाला मारत जे ।
याद बिगर किएं अंग आवही, स्वाद आसिक मासूक के ॥ ४३

ब्रह्मात्माएँ सोते समय नींदमें करवट लेते हुए भी अपने प्रियतम परमात्माके नामकी पुकार करतीं हैं. प्रियतमको याद किए बिना भी उनके हृदयमें प्रियतम धनीके मिलनका परमसुख प्राप्त होता है.

जो होए आवे मोमिन रूह से, सो कबूं ना और सों होए ।
इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोए ॥ ४४

ब्रह्मात्माएँ अपने प्रियतम धनीके लिए जो कुछ कर सकतीं हैं वैसा अन्य किसीसे भी नहीं हो सकता है. जो आत्माएँ इस नश्वर जगतमें भी स्वयंको जागृत करतीं हैं उनको दोनों स्थानों (नश्वर जगत एवं दिव्य परमधाम) में शोभा प्राप्त होगी.

देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड ।
धिक धिक पडो तिन अकलें, वह नहीं वतनी अखंड ॥ ४५

जो आत्माएँ अपने सद्गुरुका वियोग सुनकर अपने शरीरको यथावत् रखतीं

हैं उनकी बुद्धिको धिक्कार है. वे दिव्य परमधामकी अङ्गना नहीं हैं.

ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान ।
ए मोमिन रूहें जानहीं, जाकों अरस दिल कह्यो सुभान ॥ ४६

नश्वर जगतके जीव मात्र बाह्य भावसे मित्रता दिखाते हैं. इनको अन्तरात्माकी पहचान नहीं होती है. इस रहस्यको ब्रह्मात्माएँ ही जानतीं हैं जिनके हृदयको परब्रह्म परमात्माका धाम कहा गया है.

रूहें दम बिछोहा ना सहें, जो होए बका की असल ।
रूह हादी की चलते, अरवा आगूं ही जाए चल ॥ ४७

जो आत्माएँ दिव्य परमधामकीं हैं, वे पल मात्रके लिए भी अपने प्रियतम धनीका वियोग सहन नहीं कर सकतीं हैं. अपने सद्गुरुका महाप्रयाण सुनते ही उनकी आत्मा पहले ही शरीरको छोड़ देती है.

दिल हकीकी रेहे ना सकें, जो आया लुदंनी दरम्यान ।
दिल मजाजी क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान ॥ ४८

सत्यनिष्ठ ब्रह्मात्माओंके हृदयमें जब तारतम ज्ञान प्राप्त होता है तब वे क्षणमात्रके लिए भी अपने प्रियतम धनीके बिना नहीं रह सकतीं. किन्तु जिनका हृदय असत्य जगतकी ओर आकृष्ट है वे जीव वियोगके समय क्या कर सकते हैं ? ब्रह्मात्माओंके साथ उनका जमीन-आसमानका अन्तर है.

कोई छोडे ना अपनी असल, पोहोंचे सिफलीका मलकूत ।
जबरूती जबरूत में, रूहें लाहूती लाहूत ॥ ४९

वस्तुतः कोई भी अपने मूलको नहीं छोड़ता है. इसलिए नश्वर जगतके जीव वैकुण्ठ तक ही पहुँच पाते हैं. किन्तु ईश्वरीसृष्टि अपने अक्षरधाममें तथा ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधाममें पहुँचतीं हैं.

बेवरा लिख्या मुसाफ में, लिखे जुदे जुदे बयान ।
दिल मजाजी क्यों समझे, जाको मुरदार कह्या फुरकान ॥ ५०

कुरान आदि धर्मग्रन्थोंमें अलग-अलग प्रसङ्गोंमें इस प्रकारके विवरण दिए

हैं. नश्वर जगतके जीव इस रहस्यको कैसे समझ पाएँगे जिनको कुरानने मृततुल्य (मुरदार) कहा है.

ए उपले पानी उजूसे, हुआ न कोई पाक ।
ए पानी न पोहोंचे दिलको, क्या होए ऊपर धोएं खाक ॥ ५१

इस नश्वर जगतके पानीसे बाह्य अङ्ग-प्रत्यङ्गोंको धो (वुजू) कर आज तक कोई भी पवित्र नहीं हुआ है क्योंकि यह पानी हृदयको शुद्ध नहीं कर पाता है. इसलिए इस पार्थिव शरीरको ऊपर-ऊपरसे धोने मात्रसे क्या लाभ हो सकता है ?

किताबों सबों यों कह्या, अरसें पोहोंचे रूह पाक ।
दिल मजाजी इन जिमी के, मिल जाए खाकमें खाक ॥ ५२

सभी धर्मग्रन्थोंमें यही कहा है कि पवित्र आत्माएँ दिव्य परमधाममें पहुँचतीं हैं. इस नश्वर जगतके मोहग्रस्त जीवोंका शरीर इसी नश्वर जगतमें मिल जाता है.

खाक कछू न पावहीं, रूह तो अपने बीच असल ।
कोई देखे सहूर करके, तो पोहोंचे हादी कदमों नसल ॥ ५३

नश्वर जगतके इन जीवोंको कुछ भी प्राप्त होनेवाला नहीं है जबकि ब्रह्मात्मा अपने चिन्मय स्वरूपमें मूल परमधाममें ही है. यदि कोई हृदयपूर्वक विचार करेंगे तो वे अपने सद्गुरुका अनुसरण करते हुए अपने मूलमें पहुँच जाएँगे.

गुम हुई जिनोंकी अकलें, होए नजीक न तिनों हक ।
जान बूझ न छोडे इन जिमी, तिन से रेहेनी न होए बेसक ॥ ५४

जिनकी बुद्धि जगतकी मायामें ही भ्रमित हो गई है वे कभी भी परमात्माके निकट नहीं हो सकते हैं. ऐसे लोग जानबूझ कर भी नश्वर जगतको नहीं छोड़ सकते हैं. उनसे निश्चय ही ब्रह्मात्माओंका जैसा श्रेष्ठ आचरण नहीं हो पाता है.

कदी केहेनी कहे मुखसे, बिन रेहेनी न होवे काम ।
रेहेनी रूह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम ॥ ५५

कदाचित अपने मुखसे उच्च ज्ञानकी बात कर भी ली जाए किन्तु उसको

आचरणमें लाए बिना कार्य सिद्ध नहीं होता है. श्रेष्ठ आचरणके द्वारा ही आत्मा जागृत हो सकती है और मात्र कथन जिह्वा तक ही सीमित रह जाता है.

केहेनी सुननी गई रातमें, आया रेहेनी का दिन ।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर अरस बका तन ॥ ५६

थोथा ज्ञानको कहने एवं सुननेकी परम्परा अज्ञानमयी रात्रिमें ही चलती रही है. अब तो ब्रह्मज्ञानका उदय होने पर पवित्र आचरणका समय आ गया है. आचरणके बिना मात्र कथनका कोई अर्थ नहीं रह जाता है. पवित्र आचरणसे ही दिव्य परमधाम तथा पर आत्माकी पहचान हो सकती है.

केहेनी करनी चलनी, ए होए जुदियां तीन ।
जुदा क्या जाने दुनी कुफरकी, और ए तो इलम यकीन ॥ ५७

कथन (कहनी), कर्म (करनी) एवं आचरण (चलनी) इन तीनोंका महत्त्व भिन्न-भिन्न है. नश्वर जगतके अज्ञानी जीव इस रहस्यको कैसे समझ पाएँगे ? वस्तुतः यह तो परब्रह्म प्रदत्त तारतम ज्ञान एवं निष्ठाके द्वारा ही ज्ञात होता है.

अरस सब जाहेर हुआ, नूर तजल्ला हक ।
रूहअल्ला महंमद मेहेदीने, उडाए दई सब सक ॥ ५८

अब तो परब्रह्म परमात्माके तेजोमय तारतम ज्ञानके अवतरणसे परमधामके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो गए हैं. श्रीश्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें मेरे हृदयमें विराजमान होकर इन सभी सन्देहोंका निवारण कर दिया है.

सूर उग्या मारफत का, महंमद मेहेदी दिल ।
नूर अंधेर जुदे हुए, जो रहे थे रातके मिल ॥ ५९

अब मेरे हृदयमें सद्गुरुके अवतरित होने पर ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्यका उदय हो गया है. उसके प्रकाशसे अब सत्य और असत्य (ब्रह्म आत्माएँ तथा नश्वर जगतके जीव) भिन्न-भिन्न दिखाई देने लगे हैं जो अज्ञानरूपी अन्धकारमें एक समान दिखाई दे रहे थे.

कुफर और ईमान की, सुध न थी बीच रात ।
अब सुध परी सबन कों, जाहेर हुई हक जात ॥ ६०

इस अज्ञानमयी रात्रिमें भ्रान्ति एवं विश्वासकी सुधि नहीं थी. अब

ब्रह्मात्माओंके प्रकट होने पर तारतम ज्ञानके द्वारा सबको सब प्रकारकी सुधि प्राप्त हुई है.

ना सुध मोमिन मुसलिम, ना सुध काफर मुनाफक ।
सो सुध हुई सबन कों, किया बेवरा इलम हक ॥ ६१

आज तक इस जगतमें प्रेमी ब्रह्मात्माएँ तथा धर्मनिष्ठ ईश्वरीसृष्टिकी सुधि नहीं थी. न ही अन्धविश्वासी तथा अविश्वासी जीवोंकी पहचान थी. अब ब्रह्मज्ञानके अवतरणसे सभीको इनकी सुधि हुई और सत्य एवं असत्यका निरूपण हो गया.

हक इलम मारफत की, जाहेर किया नबी दिल नूर ।
कुफर काढ ईमान दिया, ऊग्या दिल मोमिन अरसों सूर ॥ ६२

अब सद्गुरुने मेरे हृदयमें अवतरित होकर ब्रह्मज्ञानका प्रभात कर दिया. जिससे नश्वर जगतके जीवोंके हृदयके अन्धविश्वासको दूर कर उसमें निष्ठा भर दी गई. अब सभी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्यका उदय हो गया है.

खोली इलमें सब किताबें, या कतेब या वेद ।
सब खोले मगज मुसाफ के, माहें छिपे हुते जो भेद ॥ ६३

इस ब्रह्मज्ञानने वेद तथा कतेब ग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर दिया जिनमें विभिन्न प्रकारके गूढ़ रहस्य भरे हुए थे.

जेता कोई पैगंमर, सो सब जहूदों माहें ।
इसलाम मोमिन सब याही में, कोई जाहेरियों में नाहें ॥ ६४

इस नश्वर जगतमें जितने भी पैगम्बर हुए हैं वे सब यहूदियोंमें हुए हैं. यहाँ तक कि इस्लाम धर्म तथा मोमिन आत्माएँ भी उसीमें हुई हैं. कर्मकाण्ड तथा बाह्य आचरणका अनुसरण करने वालोंमें कोई भी सम्मिलित नहीं है.

जाकी करे मुसाफ सिफतें, औलिए अंबिए पैगंमर ।
सो हुए सब जहूदों मिने, जो देखे बातून सहूर कर ॥ ६५

कुरान आदि धर्मग्रन्थोंमें जिन वली, नबी एवं पैगम्बरोंकी प्रशंसा की है वे

सभी यहूदियोंमें ही हुए हैं. यदि हृदयपूर्वक विचार करेंगे तो यह ज्ञात होगा.

जिनें लिए माएने बातून, हुआ पैगंमर सोए ।
उमत औलिए अंबिए, बिन बातून न हुआ एक कोए ॥ ६६

जिसने धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको ग्रहण किया है वही परमात्माका सन्देश वाहक (पैगम्बर) बना है. धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको ग्रहण किए बिना कोई भी ज्ञानी, पैगम्बर तथा नबीका समुदाय नहीं कहलाया है.

जाहेरी बडे जानें आपकों, और समझें नहीं हकीकत वतन ।
हक इलम आया नहीं, तोलों होए नहीं रोसन ॥ ६७

धर्मग्रन्थोंका बाह्यार्थ ग्रहण करनेवाले लोग स्वयंको ज्ञानी समझते हैं किन्तु उन्हें परमधामकी यथार्थताका ज्ञान नहीं होता है. तारतम ज्ञानके अवतरण हुए बिना उनका हृदय प्रकाशित नहीं हो सकता था.

कह्या जाहेर माहें दुनियां, और बातून माहें हक ।
ए वेद कतेब पुकारहीं, हक इलम कहें बेसक ॥ ६८

धर्मग्रन्थोंके बाह्यार्थको ग्रहण करने पर नश्वर जगतकी सुधि होती है और गूढ़ार्थोंको ग्रहण करने पर परमात्माकी पहचान हो सकती है. वेद तथा कतेब ग्रन्थ भी यही पुकार करते हैं. तारतम ज्ञानने भी इसी तथ्यको स्पष्ट कर दिया है.

ए नूर जाहेर तो हुआ, जब कुराने खोली हकीकत ।
रात मेटके दिन किया, सो दिल महंमद सूर मारफत ॥ ६९

इस जगतमें तारतम ज्ञानका प्रकाश तभी प्रकाशित हुआ जब उसने कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर यथार्थताकी पहचान करवा दी. श्यामा स्वरूप सद्गुरुके हृदयसे उदय हुए ब्रह्मज्ञानरूप सूर्य (तारतम ज्ञान) ने अज्ञानरूप अन्धकारयुक्त रात्रिको दूर कर ज्ञानरूप दिनको प्रकट किया.

कौल किया हकें रूहों सों, बीच बका वतन ।
सो साइत आए मिली, जाहेर हुआ अरस तन ॥ ७०

दिव्य परमधाममें परब्रह्म परमात्माने अपनी अङ्गरूपा ब्रह्मात्माओंको जो

वचन दिए थे, वह समय आ गया है. अब सभीको परमधाम तथा अपनी परात्माकी पहचान हो गई है.

एक खुदी थी दुनी में, दूजी सुभे सक ।
करते फैल तरफ हवा के, पीठ दिए अरस हक ॥ ७१

इस नश्वर जगतमें एक ओर अहङ्कार व्याप्त था तो दूसरी ओर परमात्माके विषयमें सन्देह भरा हुआ था. जिसके कारण नश्वर जगतके जीव परब्रह्म परमात्मा तथा परमधामकी ओर पीठ देकर शून्य-निराकार पर्यन्तका ही आचरण किया करते थे.

सो खुदी काढी जडमूलसे, हुए जाहेर हक इलम ।
सक सुभे कछु ना रही, हुई सब में एक रसम ॥ ७२

अब तारतम ज्ञानने प्रकट होकर उस अहङ्कारको जड़-मूलसे समाप्त कर दिया. जिसके कारण किसीके भी हृदयमें कोई सन्देह नहीं रहा और सभी लोग एक ही परब्रह्म परमात्माकी उपासनाकी ओर लग गए.

जुदी जुदी जाते कहावती, फैल करते जुदे नाम धर ।
सो रात मेंटके दिन किया, हुई जाहेर सबों फजर ॥ ७३

इस नश्वर जगतमें अलग-अलग जातियाँ अलग-अलग नाम लेकर अपने इष्टकी पूजा करतीं थीं. अब तारतम ज्ञानने इस अज्ञानमयी रात्रिको दूर कर ज्ञानका प्रकाश प्रकट किया है. जिससे सबके हृदयमें ज्ञानका प्रभात हो गया.

जिनों खुली नजर रूह की, सोई पोहोंचे अरस हक ।
जिनों छूटी न नजर जाहेरी, सो पढे दुनी बीच सक ॥ ७४

तारतम ज्ञानके द्वारा जिनकी आत्मदृष्टि खुल गई है वे परमात्माके दिव्य परमधाममें पहुँच गए हैं. किन्तु जिनकी बाह्यदृष्टि नहीं छूटी है वे जगतमें ही रह कर शङ्काओंसे ग्रस्त हो गए हैं.

जिनों खुली हकीकत मारफत, सो सहे न बिछोहा खिन ।
और हक इलम खोल्या आखरी, ए बीच असल अरस तन ॥ ७५

जिन आत्माओंको यथार्थताका बोध हुआ एवं परमात्माकी पूर्ण पहचान हो

गई वे क्षण भरके लिए भी अपने प्रियतम धनीका वियोग सहन नहीं करतीं हैं. अन्तिम समयमें प्रकट हुए इस तारतम ज्ञानने ब्रह्मात्माओंके मध्य यह स्पष्ट कर दिया है.

जो जाग उठ बैठा हुआ, जगाया हक इलम ।
सो हादी बिना पल एक ना रहे, छोड न सके कदम ॥ ७६

जो आत्माएँ ब्रह्मज्ञानके द्वारा जागृत होकर बैठ गईं हैं, वे अपने सद्गुरुके बिना एक क्षणके लिए भी नहीं रह सकतीं हैं. वे उनके चरणोंको कदापि नहीं छोड़ सकतीं.

सब साहेदी दै जो हदीसों, और अल्ला कलाम ।
सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम ॥ ७७

जब कुरान, हदीस आदि कतेब ग्रन्थ तथा परब्रह्म परमात्माके वचन तारतम ज्ञानने साक्षी दे दी है तो इस साक्षीको लेकर भी जो आत्माएँ स्वयं समर्पित होनेमें पीछे रहेंगी उन्हें सद्गुरु तथा परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णका संरक्षण प्राप्त नहीं होगा.

जिनों लुदंनी पोहोंचिया, लिया बका अरस भेद ।
सो क्यों गिरो सों जुदा परे, जाए परे कलेजें छेद ॥ ७८

जिन ब्रह्मात्माओंको तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ है और जिन्होंने उससे परमधामका रहस्य समझ लिया है वे ब्रह्मात्माओंके समुदायसे कैसे भिन्न हो सकेंगी ? उनके हृदयको इस ब्रह्मज्ञानने विदीर्ण (घायल) कर दिया है.

जाए खुली हकीकत मारफत, पाई अरस पेहेचान ।
सो क्यों सहे बका बिछोहा, जिनों नींद उडी निदान ॥ ७९

जिन ब्रह्मात्माओंको यथार्थ ज्ञान और पूर्ण पहचानका रहस्य स्पष्ट हुआ है एवं जिन्होंने परमधामकी पहचान प्राप्त कर ली है और जिनकी भ्रमरूपी निद्रा निश्चय ही उड़ गई है वे अपने धनीका वियोग कैसे सहन कर पाएँगी ?

ए पोहोंच्या मता सब रूहों कों, जब पोहोंचाया इलम हक ।
इत सक जरा ना रही, पोहोंच्या हक बका मुतलक ॥ ८०

जब सभी ब्रह्मात्माओंको तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ तब उन्हें परमधामकी सम्पूर्ण

सम्पदाएँ प्राप्त हो गईं. अब उनमें लेश मात्र भी सन्देह नहीं रहा. निश्चय ही उनकी सुरता अखण्ड परमधाममें पहुँच गईं हैं.

जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार ।
अंतर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार ॥ ८१

जिनको ब्रह्मज्ञानरूप तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ है, उनको परमात्माका साक्षात्कार हो गया है. उनके और परमात्माके बीच कोई अन्तर नहीं रहा है. वे तो अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधाममें पहुँच गईं हैं.

जाको हक इलम आया नहीं, ताए पट रह्या अंतराए ।
हक नजीक थे सेहेरग से, तहां से दूर ले गए उठाए ॥ ८२

जिनको ब्रह्मज्ञानरूप तारतम ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है, उनके और परमात्माके मध्य अभी भी अज्ञानका आवरण व्यवधानरूप बना हुआ है. वस्तुतः परब्रह्म परमात्मा उनके प्राणनलीसे भी निकट हैं किन्तु अज्ञानके कारण वे स्वयंको परमात्मासे अति दूर समझने लगीं हैं.

रूह ठौर है रूह के, ए जो लेती इत दम ।
सो गया असल जुलमतें, जिनों सुध परी न हक कदम ॥ ८३

ब्रह्मात्माओंका स्थान तो दिव्य परमधाम है वे यहाँ पर (नश्वर जगतमें) मात्र श्वास ही ले रहीं हैं. जिनको तारतम ज्ञानके द्वारा अपने प्रियतम धनीके चरणोंकी सुधि प्राप्त नहीं हुई है वे आत्माएँ अज्ञानरूपी अन्धकारमें ही भटक रहीं हैं.

लिया लुदंनी जिनने, सो क्यों सोवे कबर माहें ।
जिने मूल स्वरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें ॥ ८४

जिन्होंने तारतम ज्ञान प्राप्त किया है, वे इस नश्वर शरीररूपी कब्रमें कैसे सोई हुई रह सकतीं हैं ? जिन आत्माओंने अपने चिन्मय स्वरूप (पर आत्मा) को देख लिया है वे उठ कर जागृत हो जाएँगीं, वे कदापि सोई हुईं नहीं रहेंगी.

वाकों तो फजर हुई, हुआ बका सूरज दीदार ।
मिल्या कौल अव्वल का, जो किया था परवरदिगार ॥ ८५

ऐसी ब्रह्मात्माओंके लिए ब्रह्मज्ञानका प्रभात हो गया है. उन्हें परमधामके अखण्ड सूर्यका दर्शन हो गया है. परब्रह्म परमात्मा द्वारा उनको परमधाममें दिए गए वचन सार्थक सिद्ध हो गए हैं.

जो उठी कयामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन ।
आया असल तन में, बीच बका वतन ॥ ८६

जो ब्रह्मात्माएँ आत्मजागृतिके इस समयमें जागृत हो जातीं हैं, वे ब्रह्मज्ञानके प्रकाश होने पर कैसे सो सकतीं हैं ? वे तो स्वयंको परमधामके मूल तन (पर आत्मा) में देखतीं हैं.

जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी माहें ।
पांचों पहोंचे पांचोंमें, रूह अपनी असल छोडे नाही ॥ ८७

जो आत्माएँ जागृत होकर नश्वर शरीरको छोड़ कर परमधामकी ओर आगे बढ़तीं हैं तो वे परमधामकी चिन्मय भूमिकामें अपनी परआत्मामें जागृत हो जातीं हैं. उनका पाँच तत्त्वका नश्वर शरीर पाँचों तत्त्वोंमें मिल जाता है एवं चेतन आत्मा अपने मूल स्वरूपको नहीं छोड़ती है.

यों इलम समझावते, जो कोई ना समझत ।
तिन मजाजी दिल पर, जिन करो नसीहत ॥ ८८

इस ब्रह्मज्ञानको समझाने पर भी यदि कोई समझनेका प्रयत्न नहीं करते हैं उस प्रकारके भ्रमित हृदयवाले व्यक्तियोंको ब्रह्मज्ञानका उपदेश नहीं देना चाहिए.

काफर मुसलीम मोमिन, जो ए जुदे न होते तीन ।
तो अरस तन और जिमी के, क्यों पाइए कुफर यकीन ॥ ८९

नश्वर जगतके अविनाशी जीव, श्रद्धावान ईश्वरी सृष्टि एवं धर्मनिष्ठ ब्रह्मसृष्टियाँ

अलग अलग आचरण वाली नहीं होती तो ब्रह्मात्माओंकी आस्था एवं नश्वर जगतके जीवोंकी अनास्थाको कैसे जाना जा सकता ?

अरस बका तन मोमिन, दुनियां फना जिमी तन ।
ताकी केहेनी रहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन ॥ ९०

ब्रह्मात्माओंका चिन्मय स्वरूप (परआत्मा) दिव्य परमधाममें है. नश्वर जगतके जीवोंका शरीर नश्वर जगतमें ही है. उन जीवोंके कथन आचरणमें कैसे परिणत हो सकते हैं एवं उन दोनोंका आचरण एक समान कैसे हो सकता है ?

जो हक अरस दिल मोमिन, मिल के करो सहूर ।
कही जिमी तले की दुनियां, रूहे नूर पार तजल्ला नूर ॥ ९१

जिन ब्रह्मात्माओंका हृदय परब्रह्म परमात्माका धाम बन गया है वे परस्पर मिलकर विचार करें. नश्वर जगतके जीव इसी नश्वर भूमिकाके हैं और ब्रह्मात्माएँ अक्षरसे परे दिव्य परमधामकी हैं.

मोमिन और दुनीके, चाहिए सब बिध जुदागी ।
दुनियां पैदा जुलमत से, रूहें उतरीं अरस अजीम की ॥ ९२

इसलिए ब्रह्मात्माओं एवं नश्वर जगतके जीवोंके आचरणमें स्पष्ट अन्तर होना चाहिए क्योंकि नश्वर जगतके जीव शून्य निराकारसे उत्पन्न हैं और ब्रह्मात्माएँ अक्षरातीत परमधामसे अवतरित हुई हैं.

ए सब बातें याद राखियो, फल बखत आखरत ।
चलते फरक जो ना होवे, तो रूहों की क्यों करें हक सिफत ॥ ९३

इन सब बातोंको याद रखना, अन्तिम समयमें तुम्हारे हाथोंसे नश्वर जगतके जीवोंको मोक्षका फल प्राप्त होगा. यदि तुम्हारे आचरणमें भिन्नता नहीं होगी तो स्वयं परमात्मा तुम्हारी प्रशंसा क्यों करते ?

मर मर सब कोई जात हैं, चाहिए मोमिनों मौत फरक ।
दुनियां बीच गफलत के, मोमिन जागे दिल अरस हक ॥ ९४

इस नश्वर जगतमें सभी जीव नश्वर शरीरको छोड़ कर मृत्युको प्राप्त होते हैं

किन्तु ब्रह्मात्माओंका शरीर छोड़ना उनसे भिन्न होना चाहिए. नश्वर जगतके जीव शरीरको छोड़ कर भी शून्य निराकारमें भ्रमित होते हैं किन्तु ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माके चरणोंमें स्थित पर आत्मामें जागृत होतीं हैं.

जो रूह होसी मोमिन, चल्या चाहिए सावचेत ।
कह्या काफर स्याह मुंह आखर, मुख मोमिन नूर सुपेत ॥ ९५

इसलिए ब्रह्मात्माओंको सावधान होकर चलना चाहिए. कुरानमें कहा है, कयामतके समयमें अन्धविश्वासी लोगोंका मुख काला होगा और ब्रह्मात्माओंका मुख उज्ज्वल होगा.

मेला मजाजी दिलों का, ए चले बांधी जात कतार ।
ए अरस दिल हकीकी जीवते, क्यों चलें भांत मुरदार ॥ ९६

यह नश्वर जगत मोहग्रस्त जीवोंका मेला है. यहाँके जीव अज्ञानताके कारण एक-दूसरेकी देखादेखीमें चल रहे हैं. धामहृदया ब्रह्मात्माएँ जागृत हैं, वे मृततुल्य जीवोंकी भाँति कैसे आचरण करेंगी ?

बीच फना जीवों के, क्यों रहे बका अरस तन ।
पल इनमें रेहे ना सकें, जिन सिर बका वतन ॥ ९७

नश्वर जगतके जीवोंके साथ सत्य आत्माएँ कैसे रह सकतीं हैं ? वस्तुतः जिनका चिन्मय स्वरूप दिव्य परमधाममें है वे ब्रह्मात्माएँ पलमात्रके लिए भी संसारमें नहीं रह सकतीं हैं.

ए जो दुनियां दिल मजाजी, या उनके सिरदार ।
ना पोहोंचे फना बका मिने, ए हक कौल परवरदिगार ॥ ९८

इस नश्वर जगतके मोहग्रस्त जीव तथा उनके शिरोमणि देवी-देवताएँ नश्वर जगतके होनेके कारण अखण्ड परमधामको प्राप्त नहीं कर सकते हैं. इस प्रकारके सत्य वचन सर्वत्र कहे गए हैं.

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, ए दुनी पैदा जुलमत ।
सांच झूठ क्यों मिल सके, क्यों रास आवे सोहोबत ॥ ९९

ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधामसे इस जगतमें अवतरित हुई हैं और नश्वर जगतके

जीव शून्य-निराकारसे उत्पन्न हुए हैं. इसलिए सत्य और असत्य परस्पर कैसे मिल सकते हैं ? उनका सम्बन्ध एक-दूसरेको कैसे भा सकता है ?

सांचे सांचा मिल चलें, मिलें झूठा झूठों माहें ।
जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहें ॥ १००

सत्य आत्माएँ सत्य आत्माओंके साथ ही चलतीं हैं. मिथ्या जगतके जीव मिथ्या जगतमें ही मिल जाते हैं. जो जैसे हैं उनको उसी प्रकारका सङ्ग प्राप्त होता है. इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है.

अरस दिल मोमिन कह्या, दुनी दिल पर इबलीस ।
ए सैतान दोस्त न किसी का, जो काट देवे कोई सीस ॥ १०१

ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा गया है. नश्वर जगतके जीवोंके हृदय पर इब्लीसका साम्राज्य है. वह किसीका भी मित्र नहीं हो सकता है भला, कोई अपना सिर काट कर ही क्यों न दे.

लाहूत बका फना नासूत, ए तौल देखो दोए ।
चरकीन जिमी से निकस के, क्यों न लीजे बका खुसबोए ॥ १०२

परमधाम अखण्ड है और जगत नाशवान है. इन दोनोंका अन्तर विवेकपूर्वक देखो. इसलिए इस नश्वर भूमिसे ऊपर उठ कर दिव्य परमधामके आनन्दका अनुभव क्यों नहीं किया जाए ?

जान बूझके भूलिए, इलम पाए बेसक ।
देखो दिल बिचार के, क्यों राजी करोगे हक ॥ १०३

सन्देह निवारक तारतम ज्ञान प्राप्त करने पर भी जान-बूझ कर क्यों भूल रहे हो ? अपने हृदय पर विचार करके देखो, ऐसे आचरणसे तुम अपने प्रियतम परमात्माको कैसे प्रसन्न कर पाओगे ?

जीवते मारिए आपको, यों सबद पुकारत हक ।
जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक ॥ १०४

प्रियतम धनीने ऐसे वचन कहे हैं कि तुम जीवित रहते ही अपने अहङ्कारको

नष्ट कर दो. यदि ब्रह्मात्माएँ शरीरके जीवित रहते ही अहङ्कारको नष्ट नहीं कर पाएँगी तो क्या अन्धविश्वासी जीव ऐसा कर पाएँगे ?

फुरमाए कलाम सब रूहों कों, ए मोमिन करें सहूर ।
इन अंधेरी से निकस के, क्यों न जैए पार नूर ॥ १०५

परब्रह्म परमात्माके वचन ब्रह्मात्माओंके लिए हैं. वे ही उन पर विचार कर सकतीं हैं. इसलिए इस अज्ञानमय अन्धकारसे निकल कर अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामकी ओर क्यों न जाया जाए ?

हक हुकम हादी चलावतें, क्यों न लीजे अरस राह ।
मूल स्वरूप ले दिलमें, उडाए दीजे अरवाह ॥ १०६

सद्गुरु मेरे हृदयमें विराजमान होकर परब्रह्म परमात्माका आदेश चला रहे हैं. इसलिए तुम सब परमधामका मार्ग क्यों ग्रहण नहीं कर रहे हो. अपने मूल स्वरूपको हृदयमें धारण कर अपनी आत्माको नश्वर शरीरसे उड़ा दो.

चलना सबों सिर हक है, ए जान्या सबों तेहेकीक ।
पर आप बस कोई ना चल्या, चले एक दूजेकी लीक ॥ १०७

सभीको मृत्युके मुखमें जाना है और यह कार्य परमात्माके अधीन है. इस तथ्यको निश्चय ही सभीने जान लिया है. किन्तु कोई भी अपने गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको वशमें रख कर नहीं चल रहा है. सभी लोग एक दूसरेकी देखादेखीमें चले जा रहे हैं.

जो कोई इत जागीया, सो क्यों चले पर बस ।
सब सावचेत सुरत बांधके, बीच उठिए अपने अरस ॥ १०८

इस जगतमें जो जागृत हो गया है वह इन्द्रियोंके वशीभूत होकर कैसे चलेगा ? इसलिए सावचेत होकर अपनी सुरताको पर आत्माके साथ जोड़ कर दिव्य परमधाममें जागृत हो जाओ.

जो जागी इत होएसी, तिन का एही निसान ।
मूल स्वरूप ले सुरत में, पट खोलिए कर पेहेचान ॥ १०९

जो आत्माएँ इस नश्वर जगतमें जागृत होंगी उनका यही लक्षण है कि वे अपने

धनीकी पहचान कर अज्ञानके आवरणको दूर करते हुए अपनी सुरताको मूल स्वरूप (पर आत्मा) के साथ जोड़ दें.

भला कहे दुनियां मिने, न भूलिए अपने तन ।
हक हादी रूहें बीच खिलवत, उठिए बीच बका वतन ॥ ११०

इस नश्वर जगतमें भी ब्रह्मज्ञानका उपदेश देते हुए चलना चाहिए एवं अपने मूल स्वरूप (पर आत्मा) को नहीं भूलना चाहिए. इस प्रकार आचरण करते हुए परमधाम मूलमिलावामें जागृत होना चाहिए, जहाँ पर श्रीराजजी, श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं.

जो मसलहत कर चलिए, अरस रूहें मिल कर ।
अपनी जुदाई दुनी से, सो क्यों होए इन बिगर ॥ १११

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ तारतम ज्ञान द्वारा परस्पर विचार-विमर्श कर साथ-साथ मिलकर चलें. इसके बिना नश्वर जगतसे कैसे छूट पाएँगे ?

अपनी जुदाई दुनी से, किया चाहिए जहूर ।
दोऊ एक राह क्यों चलें, वह अंधेरी यह नूर ॥ ११२

ब्रह्मात्माओंको निश्चय ही नश्वर जगतसे विरक्ति होनी चाहिए. नश्वर जगतके जीव एवं ब्रह्मात्माएँ एक ही मार्ग पर कैसे चल सकतीं हैं ? वे अन्धकारपूर्ण जगतसे उत्पन्न हैं एवं ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधामके चिन्मय स्वरूप हैं.

महामत कहें सुनो मोमनों, मेहेर हककी आपन पर ।
सब अंगों देखो तुम, तब खुले रूह नजर ॥ ११३

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, हम पर धामधनीकी अपार कृपा है. जब तुम उनकी कृपाको अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गमें देखने लगोगी तब तुम्हारी आत्मदृष्टि खुल जाएगी.

प्रकरण १ चौपाई ११३

जेते पैगंमर भए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम ।
पाई जबराईल से बुजरकी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम ॥ १

इस जगतमें जितने पैगम्बर हुए हैं और जिन्होंने जगतके जीवों तक परमात्माका सन्देश पहुँचाया है, उन सभीको जिब्रील फरिश्तासे ही गौरव (बड़प्पन) प्राप्त हुआ है. स्वयं जिब्रील भी अक्षरधाम तक पहुँचा सका है.

हकीकत कुरान की, सो पोहोंची ठौर नूर ।
आगे हक के दिल की, सो मारफत में मजकूर ॥ २

कुरानका यथार्थ ज्ञान (हकीकत) भी अक्षरधाम तकका ही है. उससे परे अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माके हृदयकी बातोंका जो सङ्केत किया है उसे मारफत सागरके द्वारा स्पष्ट किया गया है.

हुआ म्याराज महंमद पर, तिनमें बका सब बात ।
महंमद पोहोंच्या हजूर, तहां देखी हक जात ॥ ३

रसूल मुहम्मदको खुदाके दर्शन हुए, उसका उल्लेख मेयराजनामा ग्रन्थमें है. उसमें इन सभी श्रेष्ठ बातोंका उल्लेख है. जब वे खुदाके समीप पहुँचे तब उन्होंने वहाँ पर ब्रह्मात्माओंको भी देखा.

देखे मोती पूर नूर से, कह्या मुंह पर कुलफ तिन ।
इन कुलफ को खोलेगा, तेरा दिल रोसन ॥ ४

इस ग्रन्थमें ऐसा उल्लेख है कि वहाँ पर उन्होंने मोतियोंकी भाँति प्रकाशित होनेवाली ब्रह्मात्माओंके चिन्मय स्वरूपको देखा, जिनके मुख पर ताला लगा था अर्थात् वे मौन थी. उस समय खुदाने उनसे कहा, ब्रह्मज्ञानसे प्रकाशित तेरा हृदय ही इनके मौन (ताले) को खोल सकेगा.

गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतीयन ।
देख दाहीने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन ॥ ५

इन आत्माओंने (नश्वर खेल देखनेकी माँग कर) अपराध किया है, इसलिए ये मौन हैं. उस समय खुदाने उनको ये वचन भी कहे 'तुम अपने दायें हाथकी ओर भी देखो'.

किस वास्ते फिकर करे, देख दांहिने हाथ पर ।
कुलफ मोतियोंके मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर ॥ ६

तू किस लिए चिन्ता कर रहा है, अपने दायें हाथकी ओर देख. उस समय रसूल मुहम्मदको चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दृष्टिगोचर हुआ. उन्होंने ब्रह्मात्माओंके उज्ज्वल मुखारविन्द पर मौनका ताला लगा हुआ देखा.

हकें कह्या गुनाह किया उमतें, कह्या कुलफ ऊपर दिल ।
ए जो दई फरामोसी खेलमें, जो उतरते मांग्या रूहों मिल ॥ ७

खुदाने उनको कहा, इन ब्रह्मात्माओंने नश्वर जगतका खेल माँग कर अपराध किया है. इसलिए उनके हृदय पर अज्ञानताका आवरण छा गया है. इन सभी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें भ्रमका आवरण इसलिए डाल दिया कि इन्होंने जगतमें अवतरित होते हुए नश्वर खेल देखनेकी माँग की.

कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत ।
जोए किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत ॥ ८

उस समय रसूल मुहम्मदने जरी और मोतियोंके समान प्रकाशमय वन, उपवनके दर्शन किए, जिनका प्रकाश चारों ओर छाया हुआ था. यमुनाजीके तटके वृक्ष पवित्र सुगन्धिसे सुगन्धित थे.

देख्या हौज अरस का, देहुरियां गिरदवाए ।
और जंगल पुर मोतियों से, दिया महंमद कों देखाए ॥ ९

उन्होंने परमधामका ताल (हौज कौसर) भी देखा, जिसके चारों ओर देहरियाँ सुशोभित हैं. इससे भी आगे मोतियोंके समान उज्ज्वल वन, उपवन एवं भवन आदि दिखाई दिए.

इहां लग साथ जबराईल, पोहोंच्या नूर मकान ।
कहे आगे मेरे पर जलें, चढ सक्या न चौथे आसमान ॥ १०

जिब्रील फरिश्ता भी रसूल मुहम्मदके साथ यहीं तक (अक्षर धामकी ओर यमुनाजीके तट पर्यन्त) पहुँच पाया. इससे आगे बढ़ते हुए उसने कहा, अब मेरे पङ्ख जलने लग रहे हैं. इस प्रकार वह परमधाममें प्रवेश नहीं कर सका.

महंमद की बुजरकी, बीच इन कलाम ।
और कही हकीकत, आखर आवने ईसा इमाम ॥ ११

इसी वर्णनसे रसूल मुहम्मदकी श्रेष्ठता प्रकट होती है. उन्होंने यह भी यथार्थ कहा कि अन्तिम समयमें ईसा एवं इमाम प्रकट होंगे.

पाया बीच नासूत के, हजरत ईसे दीदार ।
दई कुंजी बका की, देखे लैलतकदर तीन तकरार ॥ १२

इस नश्वर जगतमें श्रीश्यामाजीके अवतार स्वरूप निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (हजरत ईसा) ने नवतनपुरीमें परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्रीकृष्णके दर्शन प्राप्त किए. उन्होंने अखण्डके द्वार खोलनेकी कुञ्जी स्वरूप तारतम ज्ञान प्रदान किया, जिसके द्वारा श्रीदेवचन्द्रजीने महिमामयी रात्रिके तीनों खण्डों (व्रज, रास और जागनी) की लीलाका प्रत्यक्ष अनुभव किया.

हक बैठे आए अंदर, पट अरस दिए सब खोल ।
जो कही मारफत महंमदें, सो रूहअल्ला कहे सब बोल ॥ १३

स्वयं अक्षरातीत श्रीकृष्ण उनके हृदयमें विराजमान हुए और उन्होंने परमधामके सभी द्वार खोल दिए. जिसको रसूल मुहम्मदने ब्रह्मज्ञान (मारिफत) कह कर मात्र उसका सङ्केत किया था, उसे श्रीदेवचन्द्रजीने अपने वचनोंके द्वारा स्पष्ट कर दिया.

जो हुकमें किए नबिएं जाहेर, दूजे रखे रसूल पर अखत्यार ।
और गुझ रखे जो तीसरे, सो कहे रूहअल्ला कर प्यार ॥ १४

खुदाके आदेशसे रसूल मुहम्मदने कर्मके विधान सम्बन्धी ज्ञान प्रकट किया था. उससे आगे उपासना सम्बन्धी ज्ञानको प्रकट करनेका दायित्व उनकी इच्छा पर छोड़ दिया था. उससे भी आगेका ब्रह्मज्ञान गुप्त रखा गया था. उसी ब्रह्मज्ञानको सद्गुरुने प्रकट होकर प्रेमपूर्वक प्रकट किया है.

अब कहूं रूहअल्ला की, जिन दई महंमद साहेदी ।
मेरा दिल उनसे रोसन हुआ, पाई न्यामत बका दोऊ की ॥ १५

अब मैं सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके विषयमें चर्चा करूँगा, जिनके अवतरणकी साक्षी रसूल मुहम्मदने दी है. उनके द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञानसे मेरा हृदय प्रकाशित हुआ और मैंने अक्षरधाम एवं परमधामकी सम्पदा प्राप्त की.

जित जबराईल ना चल सक्या, आगे परे न पाए ।
सोए ठौर देखे सबे, बरकत रूहअल्लाहे ॥ १६

जिस परमधाममें प्रवेश करनेके लिए जिब्रील फरिश्ता भी अक्षरधामसे आगे नहीं बढ़ सका, उस अक्षरातीत परमधामके सभी स्थानोंके दर्शन सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीकी कृपासे मुझे प्राप्त हुए.

हौज जोए आई नजरों, और नूर जलाली हद ।
इलम ईसे के देखाइया, और मुसाफ हदीस महंमद ॥ १७

वहाँका ताल, यमुनाजी आदि मेरी दृष्टिके समक्ष आ गए, साथ ही अक्षरधामकी सीमाको भी देखा. इन्हीं सद्गुरुके दिव्य ज्ञानके प्रकाशसे मैंने रसूल मुहम्मदके कुरान एवं हदीस आदि धर्मग्रन्थोंको भी देखा.

और जो मजकूर हुई अंदर, कौल कहे इसारत ।
ए साहेदी हादी मोमिन बिना, तो ए किनकी को खोलत ॥ १८

दर्शनके समयमें खुदाने रसूल मुहम्मदसे जो बातें की थी और आत्मजागृतिके समयमें स्वयं भी आनेके वचन दिए थे, उनको रसूल मुहम्मदने सङ्केतके द्वारा व्यक्त किया था. इन सभी रहस्योंकी साक्षी सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी और ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कौन स्पष्ट कर सकता है ?

देखी सूरत अमरद, तासों किया मजकूर ।
सोए दुनीमें महंमदें, सब म्याराजें किया जहूर ॥ १९

रसूल मुहम्मदने खुदाके किशोर स्वरूप (अमरद सूरत) के दर्शन किए और उनसे चर्चा की. उन्होंने मेयराजनामा नामक ग्रन्थमें इस प्रसङ्गका उल्लेख किया है.

दुनियां चौदे तबकमें, जाकी तरफ न पाई किन ।
सो सब म्याराजमें, रसूलें करी रोसन ॥ २०

इन चौदह लोकोंके जीवोंमें किसीने भी परमात्माकी दिशा तक प्राप्त नहीं की. उनके विषयमें रसूल मुहम्मदने मेयराजनामामें स्पष्ट वर्णन किया है.

पर ए बानी सो समझे, जो पोहोंच्या होए इन मजल ।
और क्यों समझें ए माएने, जो इन राहमें जात हैं जल ॥ २१

किन्तु इन वचनोंको वही समझ सकता है जो इस भूमिका तक पहुँचा हुआ

है. अन्य लोग इन गूढ़ रहस्योंको समझनेमें कैसे समर्थ हो सकते हैं जो इस मार्ग पर प्रवेश करते ही जलकर भस्म हो जाते हैं.

इत पोहोंच्या ईसा रूहअल्ला, सो भी महंमद की सूरत ।
ताकों हकें कही रूह अपनी, जाकों खावंद खिताब आखरत ॥ २२

इस दिव्य परमधाममें श्रीदेवचन्द्रजी (ईसा रूह अल्लाह) पहुँचे हैं वे स्वयं श्रीश्यामाजीके अवतार हैं. उनको ही परब्रह्म परमात्माने अपनी अङ्गना कहा है और कयामतके समयके स्वामीकी शोभा प्रदान की है.

महंमद कहे ईसा आवसी, और महंमद मेहेदी इमाम ।
मार दजाल कुफर दुनी का, एक दीन करसी तमाम ॥ २३

रसूल मुहम्मदने भी कहा था, श्रीश्यामाजी सद्गुरुके रूपमें प्रकट होंगी और वे ही इमाम महदी कहलाएँगी. वे आसुरी वृत्तिरूप दज्जालको मारकर जीवोंके हृदयकी भ्रान्तिको दूर कर समस्त जगतमें एक धर्म (श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म) की स्थापना करेंगी.

एक दीन तब होवहीं, जब साफ होवे सब दिल ।
ए हक बिना न होवहीं, जो जौदह तबक आवें मिल ॥ २४

इस जगतमें एक धर्मकी स्थापना तभी हो सकती है जब सभी लोगोंके हृदय निर्मल हो जाएँगे. परब्रह्म परमात्माके बिना ऐसा कार्य होना सम्भव नहीं है भले, चौदह लोकोंके सभी प्राणी मिलकर ही प्रयास क्यों न करें ?

सोए खिताब रूहअल्ला का, या महंमद सिर खिताब ।
यातो सिर इमाम के, जो आखर खोलसी किताब ॥ २५

इस प्रकार धर्मस्थापनाकी यह शोभा सद्गुरुको प्राप्त हुई है. वे ही श्रीश्यामाजीके अवतार हैं. अन्तिम समयमें अवतरित धर्मगुरुकी यह शोभा है जो दिव्य ज्ञानसे सभी धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगे.

सोई खोले ए माएने, जिन लई मजल इन ठौर ।
ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और ॥ २६

परमधामके रहस्यपूर्ण वचनोंको वही स्पष्ट कर सकता है, जो इस पदसे

सुशोभित हो. अन्य लोग तो परमात्माके अद्वैतभावके इन वचनोंको कहते ही जलकर भस्म हो जाते हैं.

ए जो औलाद आदमकी, दिल मजाजी ऐसा दुसमन ।
पूजत सब हवा कों, सो क्यों सुनी जाए फुरकान इन ॥ २७

इस जगतमें जितने भी आदमके वंशज है उनका हृदय मोहग्रस्त है. उसमें उनके ही शत्रु इब्लीसका साम्राज्य है. इसीलिए जगतके जीव शून्य-निराकारकी पूजा करते हैं. उनसे कुरानके ये सत्य वचन कैसे सुने जा सकते हैं ?

हक महंमद मोमिन मुसाफ, ए पेहेचान होसी जब ।
झूठ सांच दोऊ मिल रहे, पाऊ पलमें जुदे होसी तब ॥ २८

जब इन जीवोंको परब्रह्म परमात्मा, श्रीश्यामाजी, ब्रह्मात्माएँ तथा सन्देश स्वरूप कुरानकी पहचान होगी तब इस जगतमें मिले हुए सत्य और असत्य पलमात्रमें अलग-अलग दिखाई देंगे.

ए सब पैदा महंमद के नूरसे, अव्वल आखर सोई नूर ।
एक साइत न खाली नूर बिना, तब दुनी देखे जब होसी जहूर ॥ २९

यह सम्पूर्ण सृष्टि श्रीश्यामाजीके प्रकाशसे प्रकट हुई है. आरम्भसे लेकर अन्त तक उनका ही प्रकाश आलोकित हो रहा है. उनके प्रकाशके बिना एकक्षण भी खाली नहीं है. जब उनका प्रकाश प्रत्यक्ष प्रकट होगा तब जगतके सभी जीव उस दिव्य तेजका दर्शन कर पाएँगे.

सिर खिताब जमाने खाबंद, सो करसी मुसाफ जहूर ।
झूठ दूर होए रात अंधेरी, सब देखें हक अरस ऊगें सूर ॥ ३०

आत्मजागृतिके अन्तिम समयके स्वामीके स्वरूपमें यह सम्पूर्ण दायित्व श्यामाजीस्वरूप सद्गुरुको प्राप्त हुआ है. वे मेरे हृदयमें विराजमान होकर धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगे. तब अज्ञानमयी रात्रिकी मिथ्या भ्रान्तियाँ उड़ जाएँगी और सभी जीव ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्योदयका दर्शन करेंगे.

सब की जुबां से महंमद, सब पर करसी हिदायत ।
ए सुकन लिखे सब किताबों, पर क्यों समझें दम गफलत ॥ ३१

सभी धर्मग्रन्थोंमें इस प्रकार उल्लेख है कि श्रीश्यामाजी सभी लोगोंकी भाषाओंमें उन्हें उपदेश देंगी. किन्तु आप्तग्रन्थोंके इन वचनोंको अज्ञानी जीव कैसे समझ सकते हैं ?

अव्वल आखर बीच महंमद, इत सब जाने दुनी कलाम ।
हकें मासूक कह्या महंमद कों, सो क्यों समझें दुनी आम ॥ ३२

नश्वर जगतके सभी जीव इतना ही समझते हैं कि सृष्टिके आदिसे लेकर मध्य एवं अन्त तक (बशरी, मलकी और हकी स्वरूपमें) श्रीश्यामाजी ही व्याप्त हैं. किन्तु ये सामान्य लोग इस रहस्यको कैसे समझ सकते हैं कि स्वयं परमात्माने श्रीश्यामाजीको अपनी प्रियतमा कहा है.

जेता कोई रूह मोमिन, जाए पोहोंच्या हक इलम ।
सो बात समझें हक अरस की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम ॥ ३३

परमधामसे अवतरित जितनी ब्रह्मात्माएँ हैं और जिनको ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) प्राप्त हुआ है वे ही परब्रह्म परमात्मा एवं परमधामके सम्बन्धकी बात समझ सकते हैं क्योंकि परब्रह्म परमात्माने उनके हृदय पर लेखनीके बिना ही यह सम्पूर्ण रहस्य अङ्कित कर दिया है.

और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकडे ।
सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे ॥ ३४

जो लोग मिथ्याभिमानी अथवा मात्र कर्मकाण्डकी सीमामें ही रत हैं, उनके हृदयको मात्र मांसपिण्ड कहा गया है. वे ब्रह्मके विषयमें क्या सुन पाएँगे और क्या कह पाएँगे. उनको तो कुरानमें अन्धे, बहरे तथा मुर्देके समान कहा गया है.

दिल मोमिन अरस कह्या, उतरे भी अरस सें ।
हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबांमें ॥ ३५

ब्रह्मात्माओंके हृदयको ही परमधाम कहा है. वे स्वयं परमधामसे अवतरित

हुईं हैं. इनके हृदय पर परमात्माका वास है. इसलिए जिह्वाके द्वारा इनकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

कह्या दुनी निकाह इबलीससे, दिल मजाजी तिन पैदास ।
जेती औलाद आदम की, पूजें हवा चलें लिबास ॥ ३६

कुरानमें उल्लेख है कि सांसारिक जीवोंका सम्बन्ध इब्लीससे हुआ है. उससे मोहग्रस्त प्राणियोंकी ही उत्पत्ति होती है. इस प्रकार आदमके जितने वंशज हैं वे सभी शून्य और निराकारकी ही पूजा करते हैं. उनकी दृष्टि बाह्य वेश-भूषा पर ही रहती है.

कह्या महमद हक के नूर से, नूर महंमद के मोमन ।
हक हादी रूहें वाहेदत, इत मिले न दूजा सुकन ॥ ३७

श्रीश्यामाजी परब्रह्म परमात्माकी तेजोमय अङ्गरूपा हैं और ब्रह्मात्माएँ श्रीश्यामाजीके तेजोमय अङ्ग हैं. दिव्य परमधाममें श्रीराजजी, श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंका अद्वैत सम्बन्ध है. इसके अतिरिक्त उनकी महिमाके लिए अन्य कोई शब्द ही उपलब्ध नहीं है.

कहे तिहत्तर फिरके महंमद के, एक नाजी नारी बहत्तर ।
नाजी को हिदायत हक की, खडा बीच राह के पर ॥ ३८

रसूल मुहम्मदके अनुयायी तिहत्तर समुदायोंमें विभक्त हुए, उनमें-से एक समुदाय ही धर्मनिष्ठ (नाजी) कहलाया, शेष बहत्तर नरकगामी (नारी) कहलाए. इसी ब्रह्मनिष्ठ समुदायको परमात्माका मार्गदर्शन प्राप्त है और यही उनके मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक खड़ा है.

और तफरका भए, चलें कौल तोड कर ।
दांए बांए चलाए दुसमने, मारे गए हक बिगर ॥ ३९

शेष सभी लोग रसूल मुहम्मदके वचनोंको भङ्ग कर भिन्न-भिन्न समुदायोंमें बँट गए. दुष्ट इबलीसने इनके हृदयमें बैठकर इनको सन्मार्गसे विपरीत यत्र-

तत्र भटकाया. इसलिए सत्यको प्राप्त किए बिना ये सब हताश होकर मारे गए.

म्याराज हुआ महंमद पर, कोई और न आया ढिग इन ।
सो आखर ईसा इमामें, किये म्याराज में सब मोमिन ॥ ४०

उस समय रसूल मुहम्मदको ही खुदाके दर्शन हुए थे. उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी खुदाके निकट नहीं पहुँच पाया. किन्तु अन्तिम समयमें अवतरित सद्‌गुरुने सभी ब्रह्मात्माओंको परमधाम व परब्रह्म परमात्माके दर्शन करवाए.

खूबियां आखर बखत की, किन मुख कही न जाए ।
खूबी कहिए तिन की, जो सबद माहें समाए ॥ ४१

आत्मजागृतिके इस अन्तिम समयकी विशेषताका वर्णन नहीं किया जा सकता. विशेषता तो उनकी ही बताई जा सकती है जो शब्दमें समा जाते हों.

अव्वल जमाने के सैयद, और बडे केहेलाए पैगंमर ।
पर सो बराबरी कर ना सकें, जो आई उमत महंमद की आखर ॥ ४२

पूर्वकालमें भी पैगम्बर तथा अवतारी पुरुष श्रेष्ठ कहलाए हैं. किन्तु अन्तिम समयमें अवतरित श्रीश्यामाजीकी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंके समकक्ष वे नहीं हो सकते हैं.

लिख्या सब कुरान में, माएने मगज सबद ।
क्या जाने अव्वल कतार जो, दुनी बांधी जाए माहें हद ॥ ४३

कुरानमें यह सब उल्लेख है किन्तु उसे समझनेके लिए गूढ़ रहस्यको जानना आवश्यक है. जो लोग आदिकालसे ही शब्दोंके बाह्यार्थमें उलझे हुए हैं और एक दूसरेके देखादेखी चल रहे हैं वे इस रहस्यको कैसे समझ पाएँगे ?

रूहअल्ला मुरदे उठावत, हक का हुकम ले ।
आखर अपने हुकुम उठावहीं, मोमिन महंमद के ॥ ४४

कुरानके अनुसार सद्‌गुरुके रूपमें अवतरित श्रीश्यामाजी परमात्माका आदेश प्राप्त कर मुर्दोंको उठाएँगी. श्रीश्यामाजी ही सद्‌गुरु बनकर अज्ञानरूपी अन्धकारमें सोई हुई अपनी अङ्गरूपा ब्रह्मात्माओंको तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत करेंगी.

इन विध लिख्या जाहेर, तो भी देखें ना खुलासा ।
सब बोले फना में रात को, किया उमतें फजर बका ॥ ४५

इस प्रकार स्पष्ट लिखा है तथापि बाह्यदृष्टिवाले लोग इस रहस्यको स्पष्ट समझ नहीं पाते. सभी लोग अज्ञानमयी रात्रिमें ही अपनी बात कर रहे हैं. किन्तु ब्रह्मात्माओंने प्रकट होकर ब्रह्मज्ञानका प्रभात कर दिया है.

जो लिखी सबे बुजरकियां, सो सब बीच आखर ।
सो गिरो नाजी महंमदी, लिखे नामें याके फैलों पर ॥ ४६

धर्मग्रन्थोंमें जिन लोगोंकी महिमा गायी है, वे अन्तिम समयमें प्रकट होनेवाली ब्रह्मात्माओंकी ही है. रसूल मुहम्मदने जिनको धर्मनिष्ठ समुदाय (नाजी गिरोह) कहा है वे ये ही ब्रह्मात्माएँ हैं, इनके सदाचरणोंके कारण इनको विशिष्ट उपाधियाँ दी गई हैं.

अव्वल आखर कयामत लग, कह्या नूर चढता नबी का ।
खाली ना जमाना महंमद बिना, ए बीच मुसाफ हदीस लिख्या ॥ ४७

आरम्भ (रसूलके जीवनकाल) से लेकर कयामत तक रसूल मुहम्मदका ही सन्देश फैलता गया. इसीलिए कुरान तथा हदीसोंमें उल्लेख किया गया है कि कोई भी समय रसूल मुहम्मदके बिना रिक्त नहीं गया है.

ए जाहेर करे सोई बुजरकी, कह्या जिनका दिल अरस ।
आखर सोई नजीकी मोमिन, जो अरस मता के वारस ॥ ४८

जिन्होंने इस रहस्यको स्पष्ट किया है वे ही श्रेष्ठ आत्माएँ कहलाई हैं. उनका ही हृदय परमात्माका धाम कहलाया. कयामतके समयमें भी वे ब्रह्मात्माएँ ही परमात्माके निकट मानी गई हैं एवं परमधामकी सम्पदाकी अधिकारिणी भी वे ही हैं.

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कौल किया हकसों जिन ।
कह्या रसूल तुम पर आवसी, सो करसी तुमें चेतन ॥ ४९

ये ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधामसे अवतरित हुई हैं. उन्होंने ही इस जगतमें अवतरित होते हुए परमात्माको न भूलनेका वचन दिया था तथापि परमात्माने

उन्हें कहा था, मेरा सन्देशवाहक तुम्हारे पास आएगा और तुम्हें सचेत करेगा.

और भेजोंगा फुरमान, सब इतकी हकीकत ।
और इसारतें रमूजें, मासूक देसी तुमें मारफत ॥ ५०

तुम्हारे लिए मैं अपना सन्देश भेजूँगा. उसमें परमधामकी यथार्थता होगी. उसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर मेरी प्रियतमा श्रीश्यामाजी तुम्हें यहाँकी पूर्ण पहचान करवाएगी.

दुनियां पैदा कलमें कुंन सें, असल उनों जुलमत ।
जिन मिल जाओ तिन में, तुम हादी मुझसे निसबत ॥ ५१

नश्वर जगतके जीव 'हो जा' (कुन) कहने मात्रसे उत्पन्न हुए हैं उनका मूल ही शून्य निराकार है. तुम उन जीवोंके साथमें घुलमिल मत जाना क्योंकि तुम्हारा सम्बन्ध मुझसे और श्यामाजीसे है.

तुम आपमें रहीयो साहेद, और गवाही फिरस्ते ।
मैं भी साहेद तुम में, तुम जिन भुलो सुकन ए ॥ ५२

तुम स्वयं एक दूसरेकी साक्षी रहना. सभी फरिश्ते भी तुम्हारी साक्षी देंगे. मैं स्वयं भी तुम्हारा साक्षी बनूँगा. तुम इन वचनोंको भूलना नहीं.

याद कीजो मेरे अरस को, और निसबत हक हादी ।
इलम देऊं मै अपना, जासों सक रहे न जरे की ॥ ५३

तुम मेरे परमधामको तथा श्रीश्यामाजी एवं मेरे साथके सम्बन्धको याद रखना. मैं तुम्हें अपना ज्ञान (तारतम ज्ञान) प्रदान करूँगा जिससे तुम्हारे हृदयमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं रहेगा.

खेल किया तुम वास्ते, ज्यों बाजीके कबूतर ।
जिन मिल जाओ तिनमें, ओ तुम नहीं बराबर ॥ ५४

जादुई कबूतरकी भाँति यह नश्वर खेल तुम्हारे लिए ही रचाया गया है. तुम इस खेलके जीवोंके साथ घुलमिल मत जाना. ये जीव तुम्हारे समान नहीं हैं.

हांसी इसहीं बात की, मेरा इलम तुमकों जगाए ।
तुम बका करोगे दम खेलके, पर सकोगे न आप उठाए ॥ ५५

इसी बातके लिए तुम्हारी हँसी होगी कि मेरा तारतम ज्ञान तुम्हें जागृत करेगा. तुम नश्वर जगतके खेलको तो तारतम ज्ञानसे अखण्ड कर पाओगी किन्तु स्वयंको जागृत नहीं कर पाओगी.

ऐसा फरेब देखावसी, तुम हुजो खबरदार ।
तुम जिन भूलो आप अरस मुझे, मैं तुमारा परवरदिगार ॥ ५६

मेरा आदेश तुम्हें ऐसा मिथ्या खेल दिखाएगा, इसलिए तुम सावचेत हो जाओ. तुम स्वयंको, परमधामको तथा मुझे भूलना नहीं. मैं स्वयं तुम्हारा स्वामी (संरक्षक) हूँ.

हक कबूं न भूलें तुमकों, बैठेंगे पकड कदम ।
हम तुमारे ऐसे आसिक, तुमें छोडें नहीं एक दम ॥ ५७

इसके प्रत्युत्तरमें ब्रह्मात्माओंने कहा, हम आपको कभी भी नहीं भूलेंगी. हम तो आपके ही चरण ग्रहण कर बैठेंगी. हम आपकी ऐसी अनुरागिणी हैं कि पल मात्रके लिए भी आपको नहीं छोडेंगी.

तुम साहेब हमारे ऐसे मासूक, हम ऐसे तुमारे आसिक ।
तुमको क्यों हम भूलेंगे, और देओगे इलम बेसक ॥ ५८

आप हमारे प्रियतम स्वामी हैं और हम आपकी अनुरागिणी आत्माएँ हैं. आप हमें सन्देह रहित ज्ञान देनेवाले हैं, इसलिए हम आपको कैसे भूल सकेंगी ?

ए तो बडी हांसी कोई खेलमें, जो ऐसी होए हमसें ।
मोमिन रहियो साहेद, ए हक कौल करत हममें ॥ ५९

हे ब्रह्मात्माओ ! यदि हम इस नश्वर जगतके खेलमें श्रीराजजीको इस प्रकार भूल जाएँगी तो हमारी सर्वाधिक हँसी होगी. इसलिए तुम सभी परस्पर साक्षी रहना. श्रीराजजी हमें ऐसे वचन कह रहे हैं.

लिख्या इन बिध जाहेर, तो भी पावे न खेल कबूतर ।
अकल न पोहोंचे इनोंकी, सो भी लिख्या लिखनहारें यों कर ॥ ६०

धर्मग्रन्थोंमें इस प्रकार स्पष्ट लिखा गया है तथापि जादुई खेलके कबूतरकी

भाँति नश्वर जगतके जीव इसे समझते नहीं हैं. इनकी बुद्धि वहाँ तक पहुँच नहीं पाती तथापि लिखने वालोंने स्पष्ट लिख दिया है.

सबद लिखे जो बुजरकों, सो सब आखरी उमत का ।
रात सबद सब फना के, सबद आखरी दिन बका ॥ ६१

धर्मग्रन्थोंमें जो भी महिमा लिखी गई है वह सब अन्तिम समयमें अवतरित होनेवाली ब्रह्मात्माओंके समुदायके लिए है. अज्ञानमयी रात्रिमें दिए गए उपदेशका कोई महत्त्व नहीं रहता है. वस्तुतः आत्मजागृतिके अन्तिम समयमें कहे गए तारतम ज्ञानके शब्द ही शाश्वत हैं.

सो ए बडाई सब उमतकी, जो कही महंमदकी आखर ।
वह खावंद कहे खेलके, ए खेलके कबूतर ॥ ६२

रसूल मुहम्मदने आत्मजागृतिकी अन्तिम घड़ीके लिए जो महिमा गाई है, वह सब ब्रह्मात्माओंकी महिमा है. ब्रह्मात्माएँ जगतके इस खेलकी स्वामिनी हैं और जगतके जीव जादुई खेलके कबूतरकी भाँति अस्तित्वहीन हैं.

एता फरक कह्या जाहेर, तो भी करें इनकी सर भर ।
वह फरक मुरदे ज्यों जीवते, पर क्या करे अकल बिगर ॥ ६३

नश्वर जगतके जीवों एवं ब्रह्मात्माओंमें इतना स्पष्ट अन्तर बताया गया है तो भी वे लोग स्वयंको ब्रह्मात्माओंके समकक्ष मानते हैं. इनमें और ब्रह्मात्माओंमें मृतक तथा जीवित व्यक्तिमें जितना अन्तर है किन्तु बुद्धिके बिना वे लोग क्या समझ सकते हैं ?

फुरमान ल्याया हकका, महंमद आया किन ऊपर ।
एती खबर किने ना करी, जोलों हुई आखर ॥ ६४

रसूल मुहम्मद किनके लिए परमात्माका सन्देश लेकर आए हैं. इतनी जानकारी भी किसीको नहीं हुई जब तक कयामत (आत्मजागृति) का समय नहीं आया.

बीती सदी अग्यारहीं, ल्याए रसूल फुरमान ।
बडे उल्मा आरफ कहावहीं, पर पडी न काहूं पेहेचान ॥ ६५

पढसी को फुरमान कों, लेसी को हकीकत ।
कलाम अल्ला को खोलसी, को लेसी हक मारफत ॥ ६६

रसूल मुहम्मदको खुदाका सन्देश ले आए ग्यारहवीं सदी बीत गई. बड़े-बड़े विद्वान् कुरानके जानकार कहलाए परन्तु किसीको भी इसकी पहचान नहीं हुई कि कुरानका अध्ययन कौन करेगा और उसकी यथार्थताको कौन ग्रहण करेगा. इतना ही नहीं इन ब्राह्मी वचनोंका गूढ़ रहस्य कौन स्पष्ट करेगा एवं परब्रह्म परमात्माकी पहचान किसको होगी.

जोलों फुरमान खोल्या नहीं, तोलों रात है सब में ।
एही फुरमान करसी फजर, जब लिया हाथ हादीने ॥ ६७

जब तक इन वचनोंका स्पष्टीकरण नहीं होगा तब तक सर्वत्र अज्ञानकी रात्रिका अन्धकार ही छाया रहेगा. यही आदेश ज्ञानका प्रभात करेगा जब इसे स्वयं सद्गुरु अपने हाथमें लेंगे.

कौल तोड जुदे किए कुफरें, मेटें मसी तफरका ।
एक दीन तब होएसी, दिन ऊगें अरस बका ॥ ६८

रसूल मुहम्मदके अनुयायी अज्ञानताके कारण उनके वचनोंका उल्लंघन कर विभिन्न समुदायोंमें विभक्त हुए. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने प्रकट होकर उनके मतभेद दूर किए. ब्रह्मज्ञानका प्रभात होने पर अखण्डकी पहचान होगी तब समस्त जगतके लोग एक ही धर्मकी छत्रछायामें आएँगे.

ए अव्वल कह्या महंमदने, आए ईसा मारसी दजाल ।
साफ दिल होसी सबों, कराए दीदार नूरजमाल ॥ ६९

रसूल मुहम्मदने प्रारम्भमें ही कह दिया था कि सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी प्रकट

होकर नास्तिकतारूपी दज्जालको मारकर दूर भगाएँगे. उनके द्वारा दिए गए तारतम ज्ञानसे सबका हृदय निर्मल होगा. तदुपरान्त वे परब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार करवाएँगे.

इमाम इमामत उमतकी, करसी अरस अजीम ऊपर ।
ए होसी हैयाती सेजदा, तब हुई तमाम फजर ॥ ७०

वे सबके सद्गुरु बनकर अपनी ब्रह्मात्माओंके समुदायको परमधामकी ओर नमन कराएँगे. उनकी यह वन्दना अखण्ड होगी तब जगतमें सर्वत्र ज्ञानका प्रभात हो जाएगा.

जो अरससे रूहें उतरीं, तामें था रूहअल्ला सिरदार ।
कह्या तुम पर रसूल भेजोंगा, हकें यों कौल किया करार ॥ ७१

परमधामसे जो ब्रह्मात्माएँ अवतरित हुईं हैं उनमें श्रीश्यामाजी स्वरूप सद्गुरु शिरोमणि हैं. परब्रह्म परमात्माने ब्रह्मात्माओंको वचन दिया था कि मैं तुम्हारे लिए अपना सन्देशवाहक भेजूँगा (वे यही हैं).

इन विध लिख्या जाहेर, पर किने न किया बयान ।
ए होए तिनहीं से जाहेर, हकें जिन पर भेज्या फुरमान ॥ ७२

धर्मग्रन्थोंमें ये वचन स्पष्ट लिखे गए हैं किन्तु किसीने भी इसका वर्णन नहीं किया. यह रहस्य उन्हीं ब्रह्मात्माओंसे उजागर होगा जिनके लिए ये आदेश वचन भेजे गए हैं.

खिताब रसूली महंमद पर, तमामी आखर मेहेदी खिताब ।
ए ले इलम आखरी हकका, महंमद मेहेदी खोले किताब ॥ ७३

परमात्माका सन्देश लेकर आनेवाले हजरत मुहम्मदको रसूल (सन्देशवाहक) की उपाधि प्राप्त हुई एवं आत्मजागृतिके इस अन्तिम समयमें अवतरित सद्गुरुको महदी मुहम्मदकी उपाधिसे विभूषित किया गया. उन्होंने ही आत्मजागृतिकी इस अन्तिम घड़ीमें ब्रह्मज्ञानरूप तारतम ज्ञान ग्रहण कर धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर दिया.

फुरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के ।
रूहअल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए ॥ ७४

परमात्माने रसूल मुहम्मदकेहाथ अपना सन्देश भिजवाया. यह भी श्रीश्यामाजी स्वरूप सद्गुरुके लिए था किन्तु किसीको भी इसकी जानकारी नहीं हुई.

ए आगे फुरमाया रसूलें, कौल तोड होसी तफरका ।
एक नाजी बहत्तर नारी लिखे, पर किन पाया न खुलासा ॥ ७५

रसूल मुहम्मदने तो पहले ही कह दिया था कि उनके अनुयायी उनके वचनोंका उल्लंघन कर विभिन्न समुदायोंमें बट जाएँगे. इनमें एक धर्मनिष्ठ समुदाय (नाजी) होगा शेष बहत्तर नरकगामी होंगे. किन्तु किसीको भी यह स्पष्ट नहीं हुआ कि कौन धर्मनिष्ठ हैं और कौन नरकगामी हैं ?

कौल सोई तोडेंगे, जिनों होसी मजाजी दिल ।
होसी जुदे बुजरकी वास्ते, कह्या फिरसी फिरके मिल मिल ॥ ७६

उन्होंने यह स्पष्ट कहा था, वे ही मेरे वचनोंका उल्लंघन करेंगे जिनका हृदय भ्रमित होगा, वे अपनी प्रतिष्ठाके लिए अलग होकर भिन्न-भिन्न समुदायोंमें विभक्त होंगे.

जाहेर लिख्या मिस्कातमें, मैं डरों पीछले इमामों सें ।
गुमराह करसी दुनी कों, ऐसे बुजरक होसी आखरमें ॥ ७७

मिस्कात नामक हदीसमें रसूल मुहम्मदने स्पष्ट रूपसे कहा है, मुझे भविष्यमें होने वाले उन धर्मगुरुओंसे भय लगता है जो मेरे अनुयायियोंको पथभ्रष्ट (गुमराह) करेंगे. अन्तिम समयमें ऐसे तथाकथित मार्गदर्शक प्रतिष्ठित कहलाएँगे.

होसी दिल सैतान का, और वजूद आदमी का ।
लोहूं सैतान ज्यों बीच वजूद, ए बीच हदीस लिख्या ॥ ७८

हदीसमें यह भी लिखा है कि उनका हृदय दुष्टतासे भरा हुआ होगा आकृति मात्रसे वे मनुष्य जैसे दिखाई देंगे. उनके शरीरमें रक्तकी भाँति दुष्टताका ही सञ्चार होगा.

तरफ चारों बीच वजूद के, लिख्या विध विध कर ।
यों दुनी निगली सैतान ने, एक हकें मोमिन बचाए फजर ॥ ७९

उनके शरीरमें चारों ओर दुष्टता ही छायी हुई रहेगी. इस प्रकारकी बातें भाँति-भाँतिसे लिखी गईं हैं. इस प्रकार दुष्टताने सभी जीवोंको अपना ग्रास बना लिया है. परब्रह्म परमात्माने केवल अपनी अङ्गनाओंको ही उसके चङ्गुलसे बचाते हुए ज्ञानमय प्रभातका दर्शन करवाया है.

भांत भांत आलम में, रसूलें करी पुकार ।
बिना मोमिन कोई न कादर, जो सुनके होए होसियार ॥ ८०

इस प्रकार विभिन्न सन्देशवाहकों तथा अवतारी पुरुषोंने इस जगतमें भाँति-भाँतिसे पुकार की है. किन्तु ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा समर्थ नहीं हुआ जो इन वचनोंको सुनकर सचेत हो गया हो.

जिन विध लिख्या कुरानमें, हदीसों में भी सोए ।
ए अरस दिल मोमिन जानहीं, जो नूर बिलंदसे उतर्‌या होए ॥ ८१

कुरानमें जिस प्रकारका उल्लेख है उसी प्रकारकी चर्चा हदीसोंमें भी है. किन्तु धामहृदया ब्रह्मात्माएँ ही इसका रहस्य जान सकतीं हैं जो दिव्य परमधामसे अवतरित हुईं हैं.

आखर खिताब सिर रसूल, दूजा सिर मेहेदी इमाम ।
इन विध खावंदी रूहअल्लाह की, ए तीनों एक दीन करसी तमाम ॥ ८२

पैगम्बरोंमें अन्तिम पैगम्बरकी शोभा रसूल मुहम्मदको प्राप्त है. इसी प्रकार कयामतके समय जगतको अखण्ड करनेकी शोभा इमाम महदीको प्राप्त हुई. इस प्रकार इन दोनोंके स्वामित्वका दायित्व श्यामास्वरूप सद्‌गुरु श्रीदेवचन्द्रजीको प्राप्त है. ये तीनों मिलकर विभिन्न मत-मतान्तरोंको एक धर्म (श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म) में सम्मिलित करेंगे.

ए अव्वल कह्या रसूलें, पर क्यों पावे मजाजी दिल ।
ना बूझे हक हादी रूहोंकी, जो चौदे तबक मथे मिल ॥ ८३

यह बात रसूल मुहम्मदने पहले ही कह दी थी किन्तु भ्रमित हृदयवाले

जगतके जीव इसे कैसे समझ सकते हैं ? चौदह लोकोंके सभी जीव मिल कर प्रयत्न करें तो भी परब्रह्म परमात्मा, श्रीश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको पहचान नहीं सकेंगे.

केहे केहे रसूलें फेर कही, ज्यों समझें सब कोए ।
पर ए बूझें हक हादी रूहें, और बूझे जो दूसरा होए ॥ ८४

रसूल मुहम्मदने यह बात वारंवार इसलिए कही है कि सब लोग समझ जाएँ किन्तु इस रहस्यको स्वयं परमात्मा जानते हैं या उनकी अङ्गभूता श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ ही जानतीं हैं. उनके अतिरिक्त अन्य किसीका अस्तित्व ही नहीं है जो इसे जान सके.

कहे हादी हक इलमसे, ज्यों एक हरफें बूझे सब बयान ।
पर नफस मजाजी क्या जान ही, जाके दिल आंख बुध न कान ॥ ८५

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने तारतम ज्ञानके द्वारा परमधामका रहस्य स्पष्ट किया है. यदि इस ब्रह्मज्ञानका एक शब्द भी समझमें आ जाए तो धर्मग्रन्थोंके सभी रहस्य स्पष्ट हो सकते हैं. किन्तु जो लोग गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके मिथ्या भ्रममें भ्रमित हैं वे इसे क्या समझ सकते हैं, जिनके हृदयमें आँखें, बुद्धि तथा कान ही नहीं हैं.

जो रूह होवे अरस अजीमकी, नूर बिलंदसे उतरी ।
सोई समझें हक इसारतें, और खबर न काहूं परी ॥ ८६

जो आत्माएँ दिव्य परमधामकी हैं और वहाँसे इस जगतमें अवतरित हुई हैं वे ही परब्रह्म परमात्माके सङ्केतोंको समझ सकतीं हैं. उनके अतिरिक्त अन्य किसीको भी इसकी सुधि नहीं हुई है.

ना तो इन विध कही जो रसूलें, ज्यों सबों समझी जाए ।
जाको असल ना दिल अकल, तिन हक कौल क्यों समझाए ॥ ८७

अन्यथा रसूल मुहम्मदने इतना स्पष्ट कह दिया है कि सभी लोग उसे समझ जाएँ किन्तु जिनका हृदय एवं बुद्धि ही सत्यकी ओर उन्मुख नहीं हैं वे खुदाके वचनोंको कैसे समझ सकते हैं ?

जो हक मुख आपे कहीं, करता हों इसारत ।
सो हककी हादी बिना, और न कोई समझत ॥ ८८

जब स्वयं परमात्माने कह दिया कि यह मैं सङ्केतमें कह रहा हूँ तो परमात्माके ये वचन उनकी अङ्गरूपा श्रीश्यामाजीके अतिरिक्त अन्य कोई समझ ही नहीं सकता.

हकें लिखे समझ इसारतें, या ल्याया समझे सोए ।
या समझें आई जिन पर, और बूझे जो दूसरा होए ॥ ८९

परमात्माके भेजे हुए ये सङ्केत वे स्वयं समझ सकते हैं या उनको लेकर आनेवाली श्रीश्यामाजी समझ सकतीं हैं, या तो जिनके लिए ये सङ्केत हैं वे ब्रह्मात्माएँ ही समझ पाएँगी. उनके अतिरिक्त अन्य किसीका अस्तित्व हो तभी कोई समझ सकता है.

तो एते दिन बूझी नहीं, साल बीते नब्बे हजार पर ।
क्यों समझे औलाद आदमकी, हक दिल छिपी खबर ॥ ९०

इसीलिए एक हजार नब्बे वर्ष व्यतीत हो गए, इतने दिनों तक इन सङ्केतोंको कोई भी समझ नहीं पाया. वस्तुतः परब्रह्म परमात्माके हृदयकी गूढ़ बातें आदमके वंशज कैसे समझ सकते हैं ?

निकाह हवासों कही आदमकी, निकाह इबलीस औलाद आदम ।
पूजे हवा खाहिस ले अपनी, जेता बुजरक आदम हर दम ॥ ९१

आदमका सम्बन्ध तो हव्वाके साथ हुआ है और आदमके वंशजोंका सम्बन्ध दुष्ट इब्लीसके साथ जुड़ा हुआ है. इसीलिए वे अपनी कामनाओंके वशीभूत होकर माया (शून्य निराकार) की ही पूजा करते हैं. तथाकथित श्रेष्ठ लोगोंकी यही दशा है.

तो रही छिपी बीच फुरमानके, निकाह इबलीस सोहोबत अकल ।
सो क्यों पावें मगज मुसाफका, कहे मुरदे मजाजी दिल ॥ ९२

इसीलिए कुरानका गूढ़ रहस्य, रहस्य ही बना रहा क्योंकि आदमके वंशज मनुष्य दुष्ट इब्लीसके साथ अपना सम्बन्ध जोड़कर भ्रमित बुद्धिवाले हो गए थे. ऐसे लोग कुरानके गूढ़ रहस्योंको कैसे समझ सकते हैं ? जो मुर्दोंकी भाँति भ्रमित हृदयवाले कहे गए हैं.

जिन गेहूं खाया कौल तोडके, आदम तिन नसल ।
सो क्यों पावें रमूजें हककी, जो लिख्या बीच अरस असल ॥ ९३

जिस आदमने खुदाके वचनोंका उल्लंघन कर गेहूँ खाया, उसीके वंशज ये मनुष्य हैं. इसलिए वे परमधाममें परब्रह्म परमात्माके साथ हुई परिचर्चाके साङ्केतिक रहस्योंको कैसे समझ सकते हैं जो धर्मग्रन्थोंमें लिखे गए हैं.

ए फुरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हकका रसूल ।
इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल ॥ ९४

रसूल मुहम्मद सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके लिए यह सन्देश लेकर आए हैं. वे ही इमाम महदी बन कर धर्मग्रन्थोंके इन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर रहे हैं. उनसे किसी भी प्रकारकी त्रुटि (कमी) नहीं होगी.

खोली अग्यारहीं सदी मिनें, ए जो किताब फुरकान ।
मार दज्जाल करे एक दीन, मिलाए कयामत निसान ॥ ९५

रसूल मुहम्मदके पश्चात् ग्यारहवीं सदीमें उनके सन्देश स्वरूप कुरानका गूढ़ रहस्य स्पष्ट किया गया. सद्गुरुने प्रकट होकर नास्तिकतारूपी दज्जालको मार भगाया एवं एक धर्म (श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म) की स्थापना की. इस प्रकार उन्होंने कयामतके लिए लिखे गए सङ्केतोंका मिलान किया.

इमाम मसी मिल रसूल, मार दज्जाल करसी फजर ।
रोज फरदा सदी बारहीं, खोली बातून उमत नजर ॥ ९६

कुरानमें यह कहा था, सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी अन्तिम धर्मगुरुके रूपमें प्रकट होकर परब्रह्म परमात्मा प्रदत्त तारतम ज्ञानके द्वारा नास्तिकतारूपी दज्जालको दूर भगाकर ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैलाएँगे. रसूल मुहम्मदके पश्चात् बारहवीं शताब्दी ही कयामतका दिन (फरदा-ए-रोज कयामत) है. इसी समयमें सद्गुरुने अपनी अङ्गरूपा ब्रह्मात्माओंकी अन्तर्दृष्टि खोल दी है.

काफर कौल कयामत के, जानते थे झूठ कर ।
सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखर ॥ ९७

नास्तिक लोग कयामतके इन सङ्केतोंको मिथ्या मान रहे थे. किन्तु ग्यारहवीं शताब्दी समाप्त होते ही रसूल मुहम्मदके ये वचन सत्य सिद्ध हो गए हैं.

कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल विचल ।
पर क्यों बूझे औलाद आदमकी, जिनकी इबलीस नसल ॥ ९८

रसूल मुहम्मदके एक भी वचन विचलित नहीं हुए हैं किन्तु आदमके वंशज उन रहस्योंको कैसे समझ सकते, जिनकी बुद्धि ही दुष्ट इब्लीसके साथ जुड़ी हुई है.

सांचे कौल महंमदके, फिरवले सब पर ।
जो कछू कह्या सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर ॥ ९९

रसूल मुहम्मदके सत्य वचन सर्वत्र छा गए. उन्होंने जो कुछ कहा था उसीके अनुसार सभी कार्य हो गए. किन्तु अविश्वासी लोग उनके वचनोंको समझ नहीं पाए.

दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम ।
भिस्त दोजक कही त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम ॥ १००

अब तारतम ज्ञानके प्रकट होने पर सभीको परब्रह्म परमात्माके प्रत्यक्ष दर्शन हुए. नश्वर देहमें सोई हुई उनकी चेतनाएँ जागृत हुईं. मुक्तिस्थल तथा नरकके सन्दर्भमें भी जो कुछ कहा था, तदनुरूप हो गया. स्वयं परमात्माने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर कर्मोंके आधार पर सबका न्याय किया.

कौल केतेक आए मिले, और केतेक हैं मिलने ।
भूल परे ना किसी कौलकी, रसूलें कह्या तिनमें ॥ १०१

इस प्रकार भविष्यवाणीके कुछ वचन प्रत्यक्ष हो गए हैं और कुछ भविष्यमें होंगे. रसूल मुहम्मदने जो कुछ कहा है उनके किसी भी वचनमें भूल नहीं होगी.

निसान मिले सब बातून, अब जाहेर होसी सब ।
दाभतल अरज काफरों, स्याह मुंह करसी तब ॥ १०२

आत्मजागृतिके समयमें प्रकट होनेवाले सभी सङ्केत प्राप्त हो गए हैं. अब वे सभी प्रत्यक्ष प्रकट होंगे. उस समय दाभातुलअर्जकी भाँति पाशविक वृत्तिवाले अविश्वासी लोगोंका मुख काला हो जाएगा.

जब खोले मगज मुसाफके, द्वार हकीकत मारफत ।
एही दिन ऊगें होसी जाहेर, देखसी दुनी कयामत ॥ १०३

सद्गुरुने प्रकट होकर कुरान आदि धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट कर दिए और पारके द्वार खोलकर परब्रह्म परमात्माकी यथार्थता एवं पूर्ण पहचान करवा दी. इसीको ब्रह्मज्ञानरूप दिनका उदय होना कहा गया है. इसी ज्ञानके प्रकाशमें नश्वर जगतके लोग कयामतके सङ्केत प्रत्यक्ष होते हुए देखेंगे.

महामत कहे ऐ मोमिनो, जिन जागी भूलो कोए ।
राह अरस इसक न छोडिए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए ॥ १०४

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! अब जागृत होने पर भूल मत करो. परमधामके प्रेम मार्गको मत छोड़ो जिससे दोनों ओर (नश्वर जगतमें एवं परमधाममें) शोभा प्राप्त हो जाए.

श्रीकयामतनामा (छोटा) सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर